2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) बिस्मिल को अपनी एकमात्र इच्छा क्यों पूरी होती दिखाई नहीं दे रही थी ?

(2) अंतिम समय के लिए बिस्मिल अपनी माँ से क्या वर माँगते हैं ?

(3) गुरु गोबिन्द सिंह की पत्नी ने अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई क्यों बाँटी ?

(4) बिस्मिल की माँ ने शिक्षा प्राप्त करने के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) बिस्मिल की आत्मिक, धार्मिक और सामाजिक उन्नति में उनकी माँ का क्या योगदान रहा ?

(2) बिस्मिल की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?

(3) आपको बिस्मिल की माता के किन गुणों ने सबसे अधिक प्रभावित किया और क्यों ?

4. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

विरोध, खर्च, आरंभ, उत्साह, सद्व्यवहार, उत्तर

5. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

माँ, संकट, सत्य, ऋण, परमात्मा

6. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के प्रकार बताइए :

(1) मैं बड़े उत्साह के साथ सेवा समिति में सहयोग देता था ।

(2) अब मैं तुमसे नहीं मिल सकूँगा ।

(3) परमात्मा जन्म-जन्मान्तर ऐसी ही माता दे ।

(4) क्या मैं कभी तुम्हारा कर्ज चुका सकूँगा ।

योग्यता-विस्तार

- 'बच्चे माँ-बाप की विशेष सम्पत्ति हैं ।' इस विषय पर वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'अपने जीवन में माता-पिता की भूमिका' विषय पर छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति का अवसर दें ।
- स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने वाले किन्हीं दो क्रांतिकारियों के जीवन-कार्य के बारे में विद्यार्थियों को बतलाएँ ।

●

15 हे जनशक्ति महान !

रांगेय राघव

(जन्म : सन् 1923 ई., निधन : सन् 1962 ई.)

रांगेयजी कवि, उपन्यासकार, विचारक तथा कहानीकार हैं । उनके द्वारा लिखा गया साहित्य मात्रा की दृष्टि से ही नहीं, गुणवत्ता की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है ।

रांगेय राघव ने इतिहास, समाज और व्यक्ति की मनोवृत्ति का चित्रण करते हुए अनेक उपन्यास तथा कहानियाँ लिखी हैं । इनमें मुख्य हैं - 'रामानुज', 'घरौंदा', 'विषादमठ', 'लोई का ताना', 'पक्षी और आकाश', 'कब तक पुकारूँ', 'राई का पर्वत', 'पथ का पाप', 'मुर्दों का टीला' आदि । 'मेधावी' उनका प्रबंध काव्य है तथा 'पिघलते पत्थर', 'राह के दीपक' में उनकी कविताएँ संकलित हैं ।

प्रस्तुत गीत में कवि रांगेयजी ने भारत की जनशक्ति को जगाने का आह्वान किया है । ये इस विराट 'जनशक्ति' की चेतना द्वारा भारत में महाक्रांति लाना चाहते हैं जिसके द्वारा एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं जहाँ लोग अमन-चैन से रह सकें । कवि ने भारतीय जनशक्ति को नवयुग का अग्रदूत बताया है ।

हे जनशक्ति महान !
जागो और जगाओ ।
हम पृथ्वी पर स्वर्ग बनायेंगे
हम दुनिया नयी बसायेंगे
हम महाजागरण गर्जन कर
अविराम चेतना लायेंगे
हे मजदूर किसान !
जागो और जगाओ ।
हम जलती आग बुझायेंगे
मानव संतोष जगायेंगे
हम ज्योति लिये उन्नति-पथ पर
अविरत बढ़ते ही जायेंगे
हे जन गौरव प्राण !
जागो और जगाओ ।
हम श्रम का वंदन करते हैं
मेधा का गायन करते हैं
हम मानव का निर्माण अमर
लख कर सुख गर्जन करते हैं
हे जीवन अभिमान !
जागो और जगाओ ।
हम हैं नवयुग के अग्रदूत
हम काल-जलधि-नाविक अभूत
हम साम्य-दीप के नव प्रकाश
हम विजयोन्मादी क्रान्ति पूत
हे प्रदीप्त गतिमान !
जागो और जगाओ ।

शब्दार्थ

अविराम निरंतर **चेतना** जागृति होश, बुद्धि, समझ **ज्योति** प्रकाश **उन्नति** प्रगति **पथ** रास्ता **मेधा** बुद्धि **अग्रदूत** अग्रणी **जलधि** सागर **नाविक** मल्लाह **अभूत** जो हुआ न हो **पूत** पुत्र **प्रदीप्त** प्रकाशित

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(1) जनशक्ति की चेतना द्वारा भारत में ..... लाना चाहिए ।

(अ) नवचेतना (ब) परिवर्तन (क) महाक्रांति (ड) नवयुग

(2) हम हैं नवयुग के ..... ।

(अ) निर्माता (ब) वाहक (क) अग्रदूत (ड) पहरेदार

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने जनशक्ति को संबोधित करते हुए क्या कहा है ?

(2) महाजागरण गर्जन से किसकी प्राप्ति होगी ?

(3) हम नवयुग के अग्रदूत कैसे बन सकते हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने मजदूर एवं किसान को क्या प्रेरणा दी है ?

(2) 'हे जनशक्ति महान' गीत के माध्यम से कवि ने जनमानस को क्या संदेश दिया है ?

4. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

अविराम, मेधा, अभिमान, जलधि

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

संतोष, निर्माण, प्रकाश, विजय

6. निम्नलिखित शब्दों की संधि-विच्छेद कीजिए :

उन्नति, नाविक, विजयोन्मादी

योग्यता-विस्तार

- 'आधुनिक हिन्दी कविता' प्राप्त करते उसमें से 'कर्मवीर' (हरिऔध), 'मेरा जीवन' (सुभद्राकुमारी चौहान), पढ़िए और इन काव्यों से उनकी तुलना कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- इस प्रकार की अन्य प्रेरक रचनाएँ छात्रों के सामने प्रस्तुत कीजिए ।

●

16 चोरी

यशपाल जैन

(जन्म : सन् 1912 ई., मृत्यु : सन् 2000 ई.)

आपका जन्म अलीगढ़ जिले के विजयगढ़ कस्बे में हुआ था । बालसाहित्य पर आपने अपनी लेखनी चलाई । बाल मनोविज्ञान पर उन्होंने अनेक कहानियाँ लिखी हैं । सन् 1990 में उनको भारत सरकार का प्रतिष्ठित पुरस्कार 'पद्मश्री' प्राप्त हुआ था ।

'अजन्ता इलोरा', 'अहिंसा' और 'भारत के यात्री' उनकी ख्यातनाम कृतियाँ हैं ।

नौकर हमारे परिवार का अंग होना चाहिए । हमें उसके साथ आत्मीय व्यवहार करते हुए स्वीकार करना चाहिए । हम जो खाते हैं वह नौकर को भी मिलना चाहिए ताकि मानवीय और सौहार्दपूर्ण वातावरण से घर में सुख-शांति और आनंद बना रहे । इस संदेश के साथ एक परिवार की कहानी यहाँ सुंदर ढ़ंग से प्रस्तुत की गई है ।

कमरे को साफ कर झाड़ू पर कूड़ा रखे जब बिन्दू कमरे से बाहर निकला, तब बराण्डे में बैठी मालती का ध्यान उसकी ओर अनायास ही चला गया । उसने देखा कि एक हाथ में झाड़ू है; पर दूसरे हाथ की मुट्ठी बँधी है और कुछ पीछे की ओर जानबूझकर आड़ में कर ली गई है । मालती को लगा, हो न हो, कमरे से बिन्दू कुछ लाया है । उसने कहा, 'बिन्दू !'

दो कदम पर बिन्दू, पर उसने मानो मालती की आवाज सुनी ही न हो ! वह चलता ही गया; बल्कि मालती ने देखा कि उसकी पुकार पर बिन्दू की चाल में कुछ तेजी आ गई है । गुस्से में भरकर उसने कहा, 'बिन्दू ! ओ बिन्दू ! ठहर, कहाँ जाता है ?'

इतना कहना था कि बिन्दू तो दौड़ने लगा और वह गया, वह गया । मालती के संदेह की पुष्टि के लिए यह सब काफ़ी था । उसने तेजी के साथ कहा, 'सुनते हो जी, देखो, बिन्दू कुछ लिये जा रहा है । जल्दी आओ ।'

नंदन अपने कमरे में बैठा अपने पत्र के लिए कुछ लिख रहा था । मालती का यों चिल्लाना उसे अच्छा नहीं लगा और उसने चाहा कि टाल दे; पर मालती माने तब न ! एक सपाटे में वह कमरे में आ गई और बोली, 'झटपट उठो । देखो, बिन्दू मुट्ठी में दबाये कुछ ले गया है ।'

नंदन ने कलम एक ओर रख दी और जैसे किसी ने जबरदस्ती पकड़कर उठा लिया हो, वह उठा । कमरे से बाहर आया तो देखता क्या है कि बिन्दू लौटकर आ रहा है । एक हाथ में झाड़ू है, दूसरा रीता है और नीचे लटका है । उसे देखते ही मालती उबल पड़ी, 'क्यों रे बिन्दू के बच्चे, मैं गला फाड़ती रही और तू रुका तक नहीं ! बोल हाथ में क्या ले गया था ?'

बिन्दू का चेहरा फक ! बोला, 'कुछ नहीं, बीबीजी !'

'झूठा कहीं का ! क्यों रे, तेरे हाथ में कुछ नहीं था, तो मेरे पुकारने पर फिर तू रुका क्यों नहीं ?' मालती ने रोषपूर्ण स्वर में पूछा ।

बिन्दू से बोला नहीं जा रहा था । कहे, तो क्या कहे ! तब नंदन आगे बढ़ा । बोला, 'घबराओ नहीं ! सच बताओ कि क्या ले गये थे ?'

'सच, बाबूजी, मेरे हाथ में झाड़ू थी और कूड़ा था ।'

'फिर वही झूठ !' मालती ने चिढ़कर कहा । 'इसे पुलिस में दे दो । लातों के देव कहीं बातों से मानते हैं ? इस बेईमान के ऊपर घर छोड़ रखा है, तो इसीलिए कि चीज उठा-उठाकर ले जाए और ऊपर से झूठ बोले !'

नंदन ने मालती को शान्त कर कहा, 'असली बात जानने का यह तरीका नहीं है ।' फिर बिन्दू को उसने प्यार से समझाया और कहा, 'मैं तुम से कुछ कहूँगा नहीं । ठीक-ठीक बताओ कि क्या ले गये थे ।' किन्तु बिन्दू घबराया-सा, खोया-सा, धरती की ओर देखता रहा और नंदन का बहुत आग्रह हुआ तो उसने इतना ही कहा 'मैंने कुछ लिया है ।'

नंदन फिर भी खीझा नहीं । बोला, 'अच्छा चल, देखूँ, तू कूड़ा कहाँ फेंक आया है ?'

बिन्दू पहले तो कुछ ठिठका, अनन्तर मुड़कर चुपचाप आगे हो लिया । नंदन और मालती ने वह जगह देखी, पर कुछ दिखा नहीं । नंदन ने कहा, 'बिन्दू, यो हैरान करने से क्या होगा ? बता क्यों नहीं देता कि क्या लाया था ?'

बिन्दू के होठ खुले, जैसे कुछ कहना चाहता हो; पर फिर बंद हो गये ।

'हाँ कहो, रुक क्यों गये ?' नंदन ने शान्त स्वर में कहा ।

'बाबूजी...' बिन्दू फिर चुप ।

'शाबाश, कहो-कहो ।'

'बाबू...जी, थोड़ी-सी मेवा नीचे पड़ी थी । मैं उठा लाया ।' बिन्दू कह तो गया; पर जैसे वह अनुभव कर रहा हो कि दुनिया का जाने कितना गहरा पाप उसने कर डाला है ।

'मैं कहती थी न !' मालती बोल उठी, 'कि यह कुछ-न-कुछ ले जरूर आया है । देखा, मेरी बात सच निकली न !'

'मेवा का तुमने क्या किया, बिन्दू ?'

'खा ली ।'

'इतनी जल्दी ? बिन्दू, झूठ मत बोलो ! सच बता दो ।'

'इधर फेंक दी ।'

नंदन और मालती ने देखा कि उसकी बताई जगह पर थोड़े से काजू और कुछ किसमिशें पड़ी हैं । नंदन ने बिन्दू के कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'मेरे साथ आओ ।'

बिन्दू चुपचाप मालिक के साथ चल दिया । नंदन उसे लेकर कमरे की ओर गया । मालती ने कहा, 'आज इसने मेवा ली है, कल को और कुछ उठा ले जाएगा । एक बार जो नीयत बिगड़ी, तो क्या फिर हाथ रुकता है ?'

नंदन ने पत्नी की बात सुनी-अनसुनी कर दी । बिन्दू को साथ लेकर कमरे में गया और कनस्तर खोलकर उसमें से एक मुट्ठी मेवा उसके हाथ में देते हुए बोला, 'बिन्दू, लो, खा लो !'

पति के इस नरमी के व्यवहार से मालती आग-बबूला हो गई । बोली, 'ऐसे ही तो नौकर बिगड़ते हैं । उसे कुछ कहना तो दूर, उलटे उसकी खुशामद कर रहे हो !'

नंदन मुस्कराया । बोला, 'मालती, चोर बिन्दू नहीं है, हम हैं । हम क्यों ऐसी चीजें खाएँ जो सबको नहीं मिलती ? इसीसे तो चोरी की भावना को जन्म मिलता है । हम लोग रोज मेवा खाते है । एक दिन इस बेचारे का मन चल आया और थोड़ी-सी ले ली, तो क्या हो गया ?'

'मैं कब कहती हूँ कि कुछ हो गया ! बात मेवा की नहीं है, नीयत की है । इसका जी चला था तो माँग लेता । मैं न देती तब कहता । घर में पचासों चीजें रहती हैं । यों तो जिस पर मन आएगा, उठाकर ले जाएगा और एक दिन यहीं होना है । वह न करेगा तो तुम करवाओगे ।'

'मालती, यह बात नाराज होने की नहीं है, सोचने की है । जब तक सब चीजें सबको नहीं मिलती, चोरी बंद नहीं हो सकती । चोरी अच्छी नहीं है, पर आज की स्थिति बड़ी लाचारी की हो गई है ।' नंदन ने समझाते हुए कहा ।

'देख लेना, एक दिन यही बिन्दू घर में से ट्रंक उठाकर न ले जाए तो मेरा नाम मालती नहीं ।'

इतना कहकर मालती रसोई में चली गई और नंदन पुनः अपनी कुर्सी पर आ बैठा । पर मन उसका दूसरी ही दिशा में चल रहा था । थोड़ी देर वह सोचता रहा । फिर उसने विचारों को समेटा और लेख पूरा करने में लग गया ।

लेख पूरा हुआ तो काफ़ी देर हो चुकी थी । वह उठा और सीधा रसोई में पहुँचा । देखता क्या है कि मालती सिल पर चटनी पीस रही है । नंदन ने कहा, 'बिन्दू कहाँ है ?'

'मैं क्या जानूँ ? तुम जानो और तुम्हारा लाडला बिन्दू जाने ।'

'उसे निकाल दिया ?'

'निकालनेवाली मैं कौन होती हूँ ?'

'कब से नहीं हैं ?'

'तभी चला गया था ।'

नंदन थोड़ा हैरानी में पड़ा । मालती ने पुनः कहा, 'तुम यहाँ के नौकरों को जानते नहीं । अपने घर में भी उनका हाथ रुकता नहीं । कुन्दन के यहाँ कितना अनाज भरा है ! फिर भी एक दिन आँख बच गई तो काका के यहाँ से गेहूँ ले ही गया ।'

नंदन जानता था कि बहस का अंत नहीं । उसने बात आगे नहीं बढ़ाई और तौलिया उठाकर स्नान करने चला गया । स्नान करने के बाद उसने भोजन किया ।

दोपहर बीती और शाम होने को आई । फिर भी जब बिन्दू न लौटा तो मालती के मन को अच्छा नहीं लगा । चौके में अब भी बिन्दू का खाना पड़ा था ।

'झूठ बोला तो क्या, आखिर बालक ही तो है । बेचारा, भूखा जाने कहाँ भटक रहा होगा ।'

कई बार कमरे से बाहर आ-आकर मालती ने बिन्दू को देखा, फिर बगीचे का एक चक्कर लगाया कि कहीं पेड़ के नीचे पड़ा सो न रहा हो । पर बिन्दू वहाँ कहाँ था जो मिलता ! मालती आकर पलंग पर पड़ गई और अपने को कोसने लगी कि जरा-सी बात को इतना तूल क्यों दिया । थोड़ी-सी मेवा ले गया था, तो क्या गज़ब हो गया था ?

सोचते-सोचते देर हो गई तो वह उठी और सहन में टहलने लगी । इतने में कुन्दन उधर से निकला तो मालती ने उत्सुकता से पूछा, 'कुन्दन, तुमने बिन्दू को देखा है क्या ?'

'बिन्दू ?' कुन्दन बोला, 'अरे, वह तो नदीवाली कोठरी में पड़ा है ?'

मालती तत्काल पैरों में चप्पल डालकर बाहर हो गई ।

लौटी तो बिन्दू उसके साथ था । बाँह पकड़कर नंदन के कमरे में ले गई और बोली, 'देखी तुमने इसकी बात ! यहाँ से गया है, तब से वहाँ कोठरी में पड़ा है ।'

नंदन ने कहा, 'क्यों रे, वहाँ क्या कर रहा था ?'

बिन्दू चूप ।

'मैं पूछता हूँ, वहाँ क्या कर रहा था ?'

फिर चुप ।

'अरे, बोलता क्यों नहीं ? मुँह में जबान नहीं है ?'

बिन्दू की आँखें डबडबा आईं ।

मालती ने कहा, 'इसका पागलपन देखो । सबेरे से कुछ नहीं खाया और भूखा-प्यासा वहाँ पड़ा है । चल, खाना खा ।'

नंदन ने कुछ कहने से पहले ही वह उसे चौके में ले गई और स्वयं परोसकर उसे खिलाने लगी । बोली, 'भर-पेट खा लेना । भूखा मत रहना ।'

नंदन ने पत्नी की बात सुनी और एक प्रसन्नताभरी मुस्कुराहट उसके चेहरे पर दौड़ गई ।

शब्दार्थ

अनायास अचानक, बिना प्रयत्न के **सन्देह** शक **रीता** खाली **कनस्तर** डिब्बा **नीयत** दानत **बहस** चर्चा

मुहावरे

गला फाड़ना जोरों से चिल्लाना **आग बबूला हो जाना** बहुत गुस्सा आना

कहावत

लातों के देव बातों से नहीं मानते (जैसा व्यक्ति वैसा व्यवहार) बुरे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने से वे नहीं मानते हैं ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) मालती की आवाज सुनकर बिन्दू की चाल में ..... ।
(अ) रुकावट आ गई । (ब) तेजी आ गई । (क) बदल गई । (ड) सुधार आ गई ।

(2) 'असली बात जानने का यह तरीका नहीं है ?' यह कौन कहता है ?
(अ) मालती (ब) बिन्दू (क) नंदन (ड) नयन

(3) 'देख लेना, एक दिन यही बिन्दू घर में से ..... उठाकर न ले जाए तो मेरा नाम मालती नहीं ।'
(अ) संदूक (ब) अनाज (क) ट्रंक (ड) सामान

(4) 'अरे, वह तो नदीवाली कोठरी में पड़ा है ।' यह वाक्य कौन कहता है ?
(अ) कुन्दन (ब) नंदन (क) मालती (ड) बिन्दू

(5) नंदन ने पत्नी की बात सुनी तो उसके चहेरे पर ..... आ गई ।
(अ) चिंता की रेखा (ब) प्रसन्नता भरी मुस्कुराहट
(क) प्रसन्नता (ड) मुस्कुराहट

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) मालती के मन में बिन्दू के प्रति क्या आशंका हुई ?

(2) मालती को शांत करते हुए नंदन ने क्या कहा ?

(3) कूड़ा फेंकने की जगह पर नंदन और मालती को क्या दिखा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) नंदन ने बिन्दू से चोरी की बात किस प्रकार मालूम की ?

(2) बिन्दू ने अपने दोष का किस प्रकार पश्चाताप किया ?

(3) बिन्दू के न दिखने पर मालती को क्या चिंता हुई ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) नौकर के संबंध में नंदन और मालती के विचारों में क्या अंतर था ?

(2) चोरी का पता लग जाने पर नंदन ने बिन्दू के साथ कैसा व्यवहार किया ? क्यों ?

(3) बिन्दू के प्रति सहानुभूति जगने पर मालती ने क्या किया ?

5. उचित जोड़ मिलाइए :

(1) बिन्दू
नंदन 'बिन्दू ! ओ बिन्दू ! ठहर, कहाँ जाता है ?'
मालती

(2) नंदन
मालती 'सच बाबूजी, मेरे हाथ में झाड़ू थी और कूड़ा था ।'
बिन्दू

(3) मालती
बिन्दू 'असली बात जानने का यह तरीका नहीं है ।'
नंदन

(4) नंदन
बिन्दू 'अरे, बोलता क्यों नहीं ? मुँह में जबान नहीं है ?'
मालती

(5) मालती
कुन्दन 'अरे, वह तो नदीवाली कोठरी में पड़ा है ।'
नंदन

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द दीजिए :

बेइमान, मालिक, असली, झूठ

7. निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञा बनाइए :

बच्चा, मुस्कुराना, लड़का, प्रसन्न, बूढ़ा, पागल, चोर

8. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) 'लातों के देव बातों से नहीं मानते हैं ।'

(2) हम क्यों ऐसी चीजें खायें जो सबको नहीं मिलती, इसीसे तो चोरी की भावना को जन्म मिलता है ।

योग्यता-विस्तार

- 'चोरी' कहानी के आधार पर 'मालती की ममता' पर एक अनुच्छेद लिखिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- बच्चे सच बोलना सीखें ऐसी अन्य कहानी या प्रेरक प्रसंग कक्षा में सुनाइए ।
- छात्रों से प्रेरक कथाओं का संकलन करवाइए ।

17 कश्मीर

वीरेन्द्र मिश्र

(जन्म : 1933 ई., निधन : 1999 ई.)

वीरेन्द्र मिश्रजी का जन्म मरैन (मध्य प्रदेश) में हुआ था । ये आकाशवाणी के मानद प्रोड्यूसर रहे थे । ये नवगीत विधा के गीतकार थे और फिल्मों के लिए भी गीत लिखते थे । इनके मुख्य काव्य संग्रह हैं गीतम, अविराम, अचल, मधुवंती, लेखनी बेला, झुलसा है छाया नट-धूप में, काले मेघा पानी दे तथा शांति गन्धर्व । इन्हें देव पुरस्कार एवं निराला पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।

कश्मीर काव्य में कश्मीर के सौंदर्य एवं संस्कृति का परिचय कराया है ।

जहाँ बर्फ़ की राजकुमारी खोयी है स्वर-लहरी में
चलो चलें फूलों की घाटी में, नावों की नगरी में

सन सन सन सन सनन सनन, गाता फिरता गीत पवन
उड़ते हैं पंछी सैलानी, खिलता शालीमार चमन
भ्रमर बजाते शहनाई, किरनों की मालिन आई
झील किनारे वह डलिया भर धूप बिखेरे बजरी में

जंगल-जंगल होड़ लगी है तितली और टिटिहरी है
कभी हवा आ जाती है, नयी ग़जल गा जाती है
तब मखमली गलीचों पर कुछ मस्ती-सी छा जाती है
मौसम कभी बदलता है, सपना कभी मचलता है
चरवाहे की वंशी छिड़ती, नील गगन की छतरी में

पलछिन किसी बहाने से, गुजरे हुए जमाने से
बस्ती करती बात जहाँ है, दूर खड़े वीराने से
चश्मे जहाँ हिमानी हैं, फूल जहाँ रूमानी हैं
हिल-हिलकर कहते पत्तों से चाँद छुपा है बदली में

जल में खिलीं रुबाइयाँ, बजरों की अँगड़ाइयाँ
चले शिकारे, संग में चल दीं बागों की परछाइयाँ
प्रेम कथाएँ विल्हण की, कौन कहे गाथा मन की
झेलम सोयी तारोंवाले नभ की नील मसहरी में

'अमरनाथ' की राहों में 'शेषनाग' की बाँहों में
पश्मीना ध्वज फहर रहा है देवदारु की छाँहों में
मन जिसका गंभीर है, वह अपना कश्मीर है
दाग लगे ना देखो भारत की बर्फ़ीली पगड़ी में

चलो चलें फूलों की घाटी में, नावों की नगरी में !

शब्दार्थ

सैलानी सहेलगाह पर आये हुए यात्री, पर्यटक **चमन** बाग **भ्रमर** भौरा **झील** बड़ा तालाब, सरोवर **डलिया** बाँस का छोटा पात्र **आलम** दुनिया **सुरमई** सुरमे के रंग का, हल्का नीला रंग **मल्लाह** नाविक **टिटिहरी** एक पक्षी विशेष का नाम **पलछिन** पल क्षण **विराना** निर्जन **हिमानी** शीतल **रूमानी** मुलायम **विल्हण** प्रेमी का नाम **मसहरी** मच्छरदानी, पलंग **पश्मीना** बर्फीली कश्मीरी भेड़ विशेष के ऊन का नाम **चश्मा** झरना **शबनम** ओस **रुबाइयाँ** फारसी काव्य का एक प्रकार **कल्हण** मूल नाम कल्याण है जो कश्मीरी कवि हैं जिसने राजतरंगिणी काव्य की रचना की है, जिसमें कश्मीर के आरंभकाल से रचनाकाल तक के इतिहास का वर्णन है ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने नावों की नगरी किसे कहा है ?

(2) कश्मीरी हवा क्या गाती है ?

(3) जंगल में किन-किन के बीच होड़ लगी है ?

(4) कवि को चश्मे और फूल कैसे लगते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कश्मीर में सुबह किस तरह होती है ?

(2) कश्मीर की रक्षा के लिए कवि क्या कहते हैं ?

(3) कश्मीर में हवा चलने पर वातावरण कैसा होता है ?

(4) पश्मीना ध्वज से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(5) कवि ने कश्मीर को नावों की नगरी क्यों कहा है ?

3. निम्नलिखित प्रश्न का पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि कश्मीर दर्शन के लिए आह्वान देते हुए कश्मीर का कैसा चित्र प्रस्तुत करते हैं ?

4. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पवन, पंछी, चमन, आलम, मल्लाह, मौसम, मसहरी, शबनम

5. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द लिखिए :

घाटी, स्वर्ग, श्याम, मीठी, दूर

6. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाइए :

बर्फ, हिम, मखमल, स्वर्ग

योग्यता-विस्तार

- कश्मीर के दर्शनीय स्थानों के चित्रों का अलबम बनाइए ।
- कश्मीरी लोक कथाओं का संकलन पढ़िए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को कश्मीर की तरह भारत के अन्य दर्शनीय स्थानों के बारे में जानकारी दी ।
- 'कलापी' का कश्मीर दर्शन यात्रा वर्णन पढ़िए ।

●

18 रचना

रघुवीर चौधरी

(जन्म : सन् 1938 ई.)

सर्जक, चिंतक, कर्मशील रघुवीर चौधरी का जन्म बापूपुरा (जिला गांधीनगर) उत्तर गुजरात में हुआ । स्कूली शिक्षा माणसा तथा उच्च शिक्षा अहमदाबाद सेंट जेवियर्स कॉलेज से, हिन्दी का अध्यापन भाषा-साहित्य भवन, गुजरात यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर पद से निवृत्त हुए और नई तालीम की संस्थाओं के सूत्रधार बने ।

रघुवीरभाई ने गुजराती भाषा में लगभग सभी विधाओं पर साधिकार लेखन किया है । कथा साहित्य, नाटक, कविता, रेखाचित्र आदि में उल्लेखनीय योगदान दिया है । अमृता, उपरवास कथात्रयी, वेणु-वत्सला, सोमतीर्थ, रुद्रमहालय आदि उपन्यास उनकी कीर्ति के स्तंभ हैं । गोकुल-मथुरा-द्वारका, अमृता तथा उपरवास कथात्रयी के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं । ग्रामीण जीवन के निकट संपर्क, शहरी अनुभवों की अभिव्यक्ति के साथ ही ऐतिहासिकता उनकी रचनाओं के प्रमुख आयाम हैं । मूल्यनिष्ठा उनकी रचनाओं के प्रमुख स्वर हैं । उनकी लम्बी कविता 'बचावनामु' इस दृष्टि से उल्लेखनीय है । रघुवीरभाई को ऊपरवास कथात्रयी के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है । वे गुजराती के सभी प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं, इनमें रणजितराम सुवर्ण चंद्रक, क. मा. मुनशी स्वर्ण चंद्रक, गोवर्धनराम त्रिपाठी पुरस्कार आदि मुख्य हैं । इन्हें साहित्य अकादमी की मानद् फेलोशिप प्राप्त है । भारत का प्रतिष्ठित साहित्यिक सम्मान (2015) ज्ञानपीठ पुरस्कार से आपको सम्मानित किया गया है ।

(शाम का समय है । ग्राम-पंचायत के कार्यालय के बंद दरवाजे के पास बैठा चौकीदार जम्हाई ले रहा है । दूर बैठे रमेश, निमेष और नरेश गंभीरता से बात करते दिखाई देते हैं । गोपी प्रवेश करती है ।)

गोपी : (दोनों ओर देख लेने के बाद) अविनाशजी यहाँ नहीं आए ?

निमेष : अरे गोपी तुम ! क्या कोई काम था अविनाश का ?

गोपी : खास तो नहीं पर कल उन्होंने वादा किया था कि आज इसी समय वे मुझे प्रसादजी की कविता समझाएँगे ।

रमेश : कविता समझने से कोई फायदा नहीं होगा गोपी, कोई ठोस काम करो या अविनाश को करने दो ।

गोपी : आप भी कैसा मजाक कर रहे हैं, रमेश भाई ! कविता तो आत्मा की कला है, संवेदना का सौंदर्य है ।

निमेष : पर आत्मा या संवेदना हो तभी न ?

गोपी : क्या निमेषभाई के आत्मा नहीं है ?

निमेष : कभी थी, आज नहीं है, हम सब आज निर्णय कर चुके हैं कि ये जो हमारे हाथ हैं, वे ही पर्याप्त हैं ।

गोपी : हाथ तो सभी के होते हैं ।

नरेश : पर हम आज इन हाथों का कमाल दिखाएँगे ।

गोपी : मैं समझी नहीं, नरेशभाई !

नरेश : हम इन हाथों का सदुपयोग करेंगे ।

गोपी : यह तो आपने और भी मुश्किल बात कही ।

रमेश : तुम अभी बच्ची हो, जाओ कविता पढ़ो ।

गोपी : सो तो आपकी सलाह के बिना भी पढ़ूँगी । लेकिन, सचमुच आप अपने हाथों का सदुपयोग करने जा रहे हैं, तो इच्छा होती है कि मैं भी साथ क्यों न दूँ ?

रमेश : तुम्हारे हाथ अभी कोमल हैं, बहिन ! जाओ, अविनाश से में कहूँगा कि तुम आई थीं । जाओ । मगर हाँ, उसका इंतजार मत करना । आज हम यहाँ से हटनेवाले नहीं है, न तो पंचायत के किसी सदस्य को हटने देंगे, जब तक वे हमारे सभी सवालों का जवाब न दे दें ।

गोपी : जवाब क्यों नहीं देंगे ? जो लंबा भाषण कर सकता है उसके लिए जवाब देना तो बड़ा आसान होता है ।

नरेश : आसान होता तो वे यहाँ आकर हमसे बात न करते ? (खड़ा होकर चौकीदार की ओर जाता है ।) देखो तो सही, दरवाजा बंद करके सभी भीतर बैठे हैं । नालायक, उल्लू के पठ्ठे ।

निमेष : अपशब्दों के उपयोग पर अविनाश का प्रतिबंध है, याद रखो ।

नरेश : तभी तो हम अभी तक शांत हैं । कितनी बार तो हमने प्रार्थनापत्र दिए ? कितने दिन तक प्रतीक्षा की ? आखिर हारकर आज उपवास पर बैठे हैं ।

रमेश : (नरेश की बात को आगे बढ़ाते हुए) ठीक दो घंटे पहले उनकी मीटिंग शुरू हुई थी । बीच में हमने बार-बार कहलवाया कि हमको अंदर बुलाओ या बाहर आकर हमसे बात करो । बस, जवाब ही नहीं दिया ।

नरेश : जैसे हमारी हस्ती ही उन्हें कुबूल नहीं ।

रमेश : ऐसा तो नहीं है, पर वे जानते हैं कि पिंजरापोल के मवेशियों की तरह ये कुछ नहीं कर सकते ।

नरेश : (ऊँची आवाज में) हम कुछ नहीं कर सकते ?

निमेष : जवाब-तलब कर सकते हैं ।

रमेश : (गोपी से) आखिर सदस्य साहबों ने कहलवाया कि तुम चाहो तो शिष्ट भाषा में आवेदन पत्र दे सकते हो ।

गोपी : बड़ी मेहरबानी की उन्होंने । पर क्या आप शिष्ट भाषा का उपयोग कर सकेंगे ?

नरेश : अविनाश कर सकता है । हमने कहा कि जाओ भाई एकांत में बैठकर संस्कृत प्रचुर भाषा में लिख लाओ । पर बड़ी देर की..... ।

रमेश : शिष्ट शब्द खोज रहा होगा !

गोपी : आप उनकी मदद करते तो अच्छा होता ।

नरेश : बस, हमने मैटर दे दिया है ।

गोपी : मैं जान सकती हूँ ?

नरेश : क्यों नहीं ? सारा गाँव जानता है । इन सदस्य महोदयों ने बेशर्म होकर भ्रष्टाचार के कई मामलों में जो सहयोग किया है.... ।

गोपी : चलिए एक क्षेत्र में तो सहकार की भावना फली ।

रमेश : गोपी, इस बात पर तुम भीतर जाकर इन लोगों को बधाई दो । मजा आएगा ।

निमेष : वे हमारा मजाक समझ पाएँ तभी न....।

नरेश : वे समझेंगे कि गोपी जैसी होनहार लड़की ने हमें बधाई दी है, तारीफ़ की है ।

गोपी : क्या सबके सब बुद्धू हैं ?

निमेष : हैं तो बड़े चालाक पर जरूरत पड़ने पर बुद्धू भी बन सकते हैं । अविनाश अभी क्यों नहीं आया ? जरा देखो तो सही गोपी, वह शायद दद्दा के घर बैठा हो ।

गोपी : आप लोगों को हर्ज न हो तो उनके साथ यहाँ आऊँ ।

रमेश : हर्ज तो शायद तुम्हारे बड़े भाई साहब को होगा ।

गोपी : यह आपकी गलतफ़हमी है । मैं आऊँगी । (जाती है)

(नरेश बंद दरवाजे के पास जाकर दरार से देखने की कोशिश करता है । चौकीदार हाथ पकड़कर उसे हटा देता है ।)

रमेश : क्या कुछ पता चला ?

नरेश : कैसे चले ? मुँह में मुँह डाले खुसुर-फुसुर कर रहे हैं सभी ।

अविनाश : (प्रवेश करते हुए) किसी का तिरस्कार मत करो नरेश । हम इस गाँव के पढ़े-लिखे युवक हैं, हमारी जिम्मेदारी कुछ ज्यादा है ।

रमेश : सो तो है ही । (अविनाश से आवेदनपत्र लेकर पढ़ता है ।)

निमेष : क्या लिखा ?

अविनाश : बस वही, उनके सभी घोटाले-पंचायत के घाटे के कारण, उर्वरकों के वितरण का प्रश्न, गरीबों के लिए आनेवाले रेशन को काला बाजार में बेचने की बात -

निमेष : वे तो कह देंगे कि रेशन वगैरह का काम तो सहकारी मंड़ली करती है ।

रमेश : मगर उस मंड़ली पर कुंड़ली मारकर तो वे ही बैठे हैं या कोई और ?

नरेश : ठीक है, ठीक है, जाओ दे आओ अविनाश !

अविनाश : आप दे आइए, रमेशभाई ।

निमेष : हाँ, आप बड़े हैं हम सबसे ।

रमेश : इससे क्या ? हमको जगाया तो है अविनाश ने ही ।

अविनाश : छोड़िए इन फालतू बातों को । आप दे आइए और कहिए कि हमें आज ही जवाब चाहिए ।

नरेश : अभी ।

रमेश : अच्छा (चौकीदार के पास जाकर) दरवाजा खोल दो ! मैं कहता हूँ दरवाजा खोल दो ! क्या ? हुकुम नहीं है ? हुकुम की ऐसी-तैसी ! मैं कहता हूँ कि खोल दो, वरना तोड़कर भीतर जाऊँगा ।

अविनाश : अरे, रमेशभाई ! आप इस पर क्यों बिगड़ते हैं ? ऐसा कीजिए-पत्र इसे दीजिए । भीतर जाकर दे आएगा ।

रमेश : ठीक है, लो, जाओ दे आओ ।

(चौकीदार पत्र लेकर भीतर जाता है । अंदर से दरवाजा बंद कर देता है । रमेश कुछ देर वहाँ खड़ा रहकर लौट आता है ।) बड़ी प्यास लगी है ।

नरेश : मुझे तो भूख भी ऐसी लगी है कि....।

निमेष : मैं तो जीवन में पहली बार उपवास कर रहा हूँ ।

अविनाश : किसने कहा था कि....।

रमेश : मैंने । उपवास का कुछ अच्छा असर पड़ता है । पुलिस पकड़कर ले नहीं जाती ।

निमेष : पुलिस तो यहाँ है ही कहाँ ?

रमेश : यहाँ न हो, पड़ोस के गाँव में तो है ।

नरेश : तो क्या ?

अविनाश : कुछ नहीं । वह आएगी तो हम उसे बता देंगे कि तुम्हें कानून का भंग करनेवालों को पकड़ना है तो पकड़ो (दरवाजे की ओर निर्देश करके) उन लोगों को ।

नरेश : और वे आपकी बात मान लेंगे ?

अविनाश : आज नहीं तो कल ।

रमेश : तुम बड़े आशावादी हो, अविनाश !

अविनाश : हाँ, हूँ तभी तो इस काम में ..... लो चौकीदार आ गया ।

(सभी उत्सुकता से चौकीदार के पास जाते हैं । वह बिना बोले ही ताला लगाने लगता है । नरेश उसे रोककर भीतर झाँक लेता है, रमेश भी । चौकीदार निमेष को रोककर ताला लगाकर शांति से चला जाता है ।)

नरेश : लो, भाग गए सभी, उस दरवाजे से ।

अविनाश : (धैर्य तथा दृढ़ता से) भागकर जाएँगे कहाँ ? उन्हें हमारे प्रश्नों का जवाब देना ही पड़ेगा, आज नहीं तो कल.....।

रमेश : कल की आशा छोड़ो । अब तो हमारा आवेदन पत्र फाइल हो गया ।

निमेष : वे लोग अब खा-पीकर चैन से सोएँगे और हम यहाँ....।

नरेश : हम उन्हें चैन से सोने नहीं देंगे । उनकी नींद हराम कर देंगे ।

अविनाश : (चिंता से) क्या करोगे ?

रमेश : दरवाजा तोड़कर अपना वह पत्र खोज निकालेंगे । फिर जाएँगे उनके घर ।

नरेश : वहाँ तो उनके पालतू कुत्ते हमें रोकेंगे । मेरा ख्याल है कि (हाथ में पत्थर लेने का अभिनय करता है ।)

रमेश : ठीक है । पथराव की बात सुनकर सभी दौड़े आएँगे....(पत्थर उठाता है ।)

निमेष : चलिए, अविनाश भाई ! उठाइए पत्थर ।

अविनाश : मजाक छोड़ो ।

रमेश : इसे तुम अभी मजाक समझ रहे हो ? वाह रे पंडित ! चलो, उठाओ पत्थर, एक साथ वार करें ।

अविनाश : नहीं । यह असंभव है । हम इस मकान को तनिक भी नुकसान नहीं पहुँचा सकते । जो हमारा ही है उसे....

रमेश : अब भी इसी भ्रम में हो कि यह हमारा है ? चलो नरेश, निमेष, देर क्यों कर रहे हो ?

(तीनों कुछ कदम आगे बढ़कर पथराव करते हैं ।)

अविनाश : रुक जाओ, मैं कहता हूँ रुक जाओ । तुम नहीं जानते हो कि तुम क्या कर रहे हो । रुक जाओ वरना....

नरेश : वरना क्या ? तुम्हीं ने तो हमें इसके लिए भड़काया था ।

अविनाश : भड़काया नहीं था, जगाना चाहा था । शायद वह मेरी गलती थी। मुझे आपसे ऐसी उम्मीद नहीं थी । रमेशभाई, कम से कम आपसे तो....

रमेश : (रुककर) तुम यहाँ से जाओ, मैं जानता हूँ यह तोड़फोड़ देखकर तुम्हें दु:ख होगा । जाओ....

अविनाश : मैं इस प्रकार पलायन नहीं कर सकता ।

निमेष : तो हमें साथ दो ।

नरेश : हाँ, हमसे तो ज्यादा ताकतवर हो, आओ हाथ बँटाओ ।

(तीनों जोरों से पथराव शुरू कर देते हैं । टूटने-फूटने की आवाजें आने लगती हैं ।)

अविनाश : आप लोग मेरी बात सुनना नहीं चाहते ? जैसी आपकी मर्जी ।

(कार्यालय के दरवाजे के पास जाकर खड़ा रहता है ।) भले ही मुझको चोट लगे ।

रमेश : हम तुम्हें चोट नहीं पहुँचाएँगे । हम निशाना लगाना जानते हैं ।

(निमेष, नरेश, अविनाश को बचाकर पत्थर फेंकते हैं ।)

नरेश : हाँ, हाँ, वे थोड़े ही हमारे दुश्मन हैं ?

(पथराव चल रहा है, वहीं गोपी दौड़ती हुई आती है । अविनाश को सामने खड़ा देखकर चीख पड़ती है ।)

गोपी : ओह, यह क्या ? आप लोग अविनाश जी पर वार कर रहे हैं ?

रमेश : नहीं, मकान पर ।

नरेश : इन्हें समझाओ कि बीच से हट जाएँ ।

गोपी : वे नहीं हटेंगे ।

निमेष : तो हमारे पत्थर भी....

गोपी : इन्हें चोट पहुँची तो ?

रमेश : हम कब कहते हैं कि ये चोट खाएँ ? हम तो इन्हें बचाते रहेंगे पर हो सकता हैं कोई पत्थर छिटककर....

गोपी : हाँ, हो सकता है । अच्छा हो कि इसका लाभ मुझे भी मिले । आप तो सुशिक्षित हैं, बुद्धिमान हैं, रुक जाइए ।

(गोपी इन लोगों के आगे इधर-उधर चलती रहती है ताकि वे पत्थर फेंक न सकें । परंतु वे गोपी को बचाकर वार करने का मौका नहीं छोड़ते ।)

अविनाश : (ऊँची आवाज से) इन्हें रोको मत गोपी ! ये सुशिक्षित हैं, समझदार भी हैं परंतु अभी इन्होंने अपने हाथ से कुछ रचा नहीं है । मुझे इस मकान से लगाव है, क्योंकि जब इसकी नींव तैयार हो रही थी तब मैंने स्वेच्छा से हाथ बढ़ाया था ।

रमेश : (जैसे अविनाश की बात छू गई हो) रुक जाओ निमेष, नरेश ! (नरेश नहीं रुकता । रमेश इसका हाथ पकड़कर रोकना चाहता है, नरेश पत्थर फेंकते वक्त संतुलन गँवा देता है, अविनाश को चोट लगती है ।)

गोपी : ओह, आपने यह क्या किया ? (दौड़कर अविनाश के पास पहुँचती है । नरेश लज्जित होकर रुक जाता है ।)

अविनाश : यह तो कुछ भी नहीं है गोपी ! (दो कदम आगे आकर) सामने से आग के गोले आते तो भी मैं नहीं हटता । यदि निमेष या नरेश ने भी मेरी तरह इस मकान की रचना में हाथ बँटाया होता तो वे भी मेरे स्थान पर खड़े होते और अंत तक अडिग रहते । पर ये लोग तोड़ते है, क्योंकि इन्होंने रचा नहीं ।

रमेश : हमें माफ करो अविनाश ! तुमने आज हमें सही अर्थ में जगाया है, अपने प्राणों की बाजी लगाकर । हम संकल्प करते है कि तुम्हारी या किसी की रचना को तोड़ेंगे नहीं, प्रतीक्षा करेंगे, सहेंगे.... ।

गोपी : इसमें तो मैं भी आपका साथ दूँगी ।

निमेष : फिर प्रसादजी की कविता का क्या होगा ?

गोपी : हो सकता है किसी नए प्रसाद की रचना इस विद्रोह और प्रतीक्षा के बीच जन्म ले । (आगे आकर बैठती है, सभी उसका अनुसरण करते हैं ।)

शब्दार्थ

ग्राम-पंचायत गाँव की अगुआई (प्रशासन) करने वाली संस्था **जम्हाई** उवासी - ऊब जाने के बाद की शारीरिक प्रक्रिया **शिष्ट भाषा** मान्य भाषा **पलायन** गायब

मुहावरा

नींद हराम कर देना चैन से सोने नहीं देना ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) गोपी को प्रसादजी की कविता कौन समझाने वाला था ?

(अ) निमेष (ब) नरेश (क) अविनाश (ड) रमेश

(2) 'तुम चाहो तो शिष्ट भाषा में आवेदन पत्र दे सकते हो ।' यह वाक्य कौन कहता है ?

(अ) रमेश (ब) निमेष (क) नरेश (ड) गोपी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) 'कविता क्या है ?' इस प्रश्न का गोपी क्या उत्तर देती है ?

(2) रमेश और नरेश ग्राम-पंचायत के सदस्यों का विरोध क्यों करते थे ?

(3) अविनाश नरेश को किसी का तिरस्कार न करने के लिए क्यों कहता है ?

(4) रमेश ने अविनाश को आशावादी क्यों कहा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) गाँव के युवक पंचायत के पदाधिकारियों से किस बात पर नाराज थे ?

(2) अपने असंतोष को व्यक्त करने के लिए उन्होंने किन-किन साधनों का उपयोग किया ?

(3) नरेश और उसके साथी अपने हाथों का कौन-सा कमाल दिखाना चाहते थे ?

(4) रमेश पथराव क्यों करना चाहता है ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) अविनाश पथराव का विरोध क्यों करता है ?

(2) 'रचना' एकांकी से हमें क्या सीख मिलती है ?

5. निम्नलिखित वाक्य किसने कहे हैं, लिखिए :

(1) ये सुशिक्षित हैं, समझदार भी हैं परंतु अभी इन्होंने अपने हाथ से कुछ रचा नहीं है ।

(2) कविता समझने से कोई फायदा नहीं होगा ।

(3) अपशब्दों के उपयोग पर अविनाश का प्रतिबंध है ।

(4) हो सकता है, किसी नए प्रसाद की रचना इस विद्रोह और प्रतीक्षा के बीच जन्म ले ।

6. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) कविता आत्मा की कला है, संवेदना का सौंदर्य है ।

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

फायदा, शिक्षित, कोमल, भ्रष्टाचार, सहयोग

योग्यता-विस्तार

- जयशंकर प्रसाद की कविता 'हिमाद्रि तुंग-शृंग से ढूँढ़कर पढ़िए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- प्रस्तुत एकांकी का कक्षा में अभिनय कीजिए ।
- क्या नवनिर्माण के लिए प्राचीन का विनाश जरूरी है ? इस विषय पर कक्षा में वाद-विवाद का आयोजन कीजिए ।

●

19 तोता और इन्द्र

नरेन्द्र मालवीय

नरेन्द्र मालवीय हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभाशाली साहित्यकार है । हिन्दी साहित्य में निबंध, कहानी, एकांकी एवं कविता में अपना योगदान दिया है । सरल और सहज भाषा उनके साहित्य की एक विशेषता रही है । मार्मिक भाषा में गहन बात को सरलता से पेश करते हैं ।

यह एक सरल और सुबोध रचना है । इस कविता को एक कहानी के आधार पर लिखा गया है । वह कहानी 'बुक ऑफ नॉलिज' से ली गई है । इसे विश्व का एक श्रेष्ठ संवाद-काव्य माना जाता है ।

सुनो भाइयो, तुम्हें सुनाते, आज एक प्राचीन कहानी ।
जो है अति सुंदर, अति अद्‌भुत, सचमुच कहानियों की रानी ॥
पुण्यभूमि काशी की महिमा, चारों दिशि में थी अति गुंजित ।
देवों सहित देवपति उसको, लखकर होते थे अति हर्षित ॥
गुजर रहे थे इन्द्र एक दिन, जब कि निकट के निर्जन वन से ।
देखा एक पेड़ अति भारी, सूखा, निर्जीवित-सा तन से ॥
उसके एक खोखले में था तोता एक बहुत ही सुंदर ।
हुआ इन्द्र को बेहद अचरज, उसको सूखे तरु पर लखकर ॥
पूछा तुरंत उन्होंने उससे - 'क्या न मूर्खता है यह भारी ।
इस सूखे तरु पर तू रहता बन करके अनजान, अनारी ॥
हरा-भरा तरु कहाँ नहीं है, क्या इस विस्तृत सुंदर वन में ?
भला यहीं रहने में तूने सोचा है क्या हित निज मन में ?'
तोता बोला - 'महाराज, यह तरु पहले था बेहद सुंदर ।
सारे वन में एकमात्र था सबसे अच्छा, सबसे मनहर ॥
जैसा था यह सबसे सुंदर, वैसा ही था यह बलशाली ।
यह ही था इस वन की शोभा, भाग्यवान, अति गौरवशाली ॥
चिड़िया, तोते, कोयल, मैना, सबको ही यह अति प्यारा था ।
महाराज, यह ही कुरूप तरु, शोभा में सबसे न्यारा था ॥
मैं जन्मा हूँ इस पर, जब इसकी शोभा थी नई-निराली ।
अतः मुझे प्राणों से भी प्यारी है इसकी डाली-डाली ॥
इसकी मोदमयी छाया में मैंने था निज होश सम्हाला ।
यह है मुझको गाना, मुसकाना, उड़ना सिखलानेवाला ॥
बचपन से ले करके अब तक इसने दी है मुझको छाया ।
मैंने हरदम इसको ही सुख-दुख का सच्चा साथी पाया ॥
किंतु आह, कुछ दिन पहले आया वन में एक शिकारी ।
उसके विष से बुझे बाण ने इस पर ढा दी आफत भारी ॥
विष के कारण सूख रहा है तब से यह तरुवर दिन-प्रतिदिन ।
अब तो इसके साथ-साथ ही मेरा भी होगा अंतिम क्षण ॥
बचपन के साथी को तजकर, भला कहीं मैं जा सकता हूँ ?

यदि जाऊँ भी, तो क्या सुख, संतोष, शांति मैं पा सकता हूँ ?
इससे अच्छा है, मैं इसके दु:ख में थोड़ा हाथ बटाऊँ ।
और अंत में सुख से इसके संग-संग मैं भी मर जाऊँ ॥'
दंग रह गये इन्द्रदेव तोते की यह सब बातें सुनकर ।
फिर, तोते से बोले वे यों तुरंत अत्यधिक हर्षित होकर-
'मैं प्रसन्न हूँ तुझसे पंछी, सुफल हुआ है तेरा जीवन ।
माँग तुरंत वर कोई मुझसे, पूर्ण करूँगा मैं इस ही क्षण ॥'
तोता बोला-'देव, यही है अभिलाषा मेरे जीवन की ।
हरा-भरा कर दें यह तरुवर, जो है शोभा सारे वन की ॥'
कहा इन्द्र ने - 'एवमस्तु !' और तरु ने फिर नवजीवन पाया ।
शोभा नई, निराली सुंदरता लेकर वह फिर लहराया ॥

शब्दार्थ

प्राचीन पुरानी **पुण्यभूमि** पवित्रभूमि **दिशि** दिशा **निर्जन** विरान **खोखला** पोला, कमजोर **अचरज** आश्चर्य **तरु** वृक्ष **निज** अपना, स्वयं **कुरूप** बदसूरत **तजकर** त्याग करके **अभिलाषा** इच्छा **लखकर** देखकर

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) इन्द्र कहाँ से गुजर रहे थे ?
(2) इन्द्र ने खोखले वृक्ष में क्या देखा ?
(3) पेड़ क्यों सूख गया था ?
(4) पेड़ पर किसने आफ़त ढा दी थी ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) सूखे पेड़ पर तोते को देख इन्द्र को क्यों आश्चर्य हुआ ?
(2) तोते ने उस सूखे वृक्ष पर रहने का कारण क्या बतलाया ? क्या आप उसे ठीक समझते हो ?
(3) तोते के उत्तर का इन्द्रदेव पर क्या प्रभाव पड़ा ? और उसका फल क्या हुआ ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) तोते ने उस पेड़ से अपने अत्यधिक लगाव के क्या-क्या कारण बतलाए हैं ?
(2) तोता और इन्द्र का संवाद अपने शब्दों में लिखिए ।

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

विस्तृत, गौरवशाली, मोदमयी, एवमस्तु

5. शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(1) जहाँ मनुष्य न हो
(2) जिसमें बल न हो
(3) देवों के अधिपति
(4) भू के पति

योग्यता-विस्तार

- इस कथा-काव्य का कहानी में रूपांतर कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- अन्य कथाकाव्य ढूँढ़कर छात्रों को सुनाइए ।

●

20 अलबम

सुदर्शन

(जन्म : सन् 1896 ई., निधन : सन् 1976 ई.)

सुदर्शनजी का जन्म पश्चिमी पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) में सियालकोट नगर में हुआ था । इन्हें बचपन से ही कहानी लिखने का शौक था । इन्होंने प्रारंभ में उर्दू में लिखना शुरू किया था, बाद में हिन्दी में लिखने लगे । इनकी पहली कहानी 'सरस्वती' नामक पत्रिका में 1920 में छपी थी। हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रेमचंद के बाद सुदर्शनजी का नाम लिया जाता है । इन्होंने फिल्मों के लिए भी कहानियाँ लिखीं जिन पर सफल फिल्मों का निर्माण हुआ । सुदर्शन सुमन, पारस, पनघट इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं ।

प्रस्तुत कहानी में पंडित शादीराम और लाला सदानंद के बीच जो आर्थिक व्यवहार हुआ उसमें संबंधों को किस तरह बचाया गया, उसका मार्मिक वर्णन है । आजकल पैसों के कारण संबंधों में दरार पड़ जाती है । ऐसे समय में मानव मूल्यों का जतन करने की प्रेरणा इस कहानी से मिलती है ।

पंडित शादीराम ने ठंडी आह भरी और सोचने लगे - क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा ?

वे गरीब थे परंतु दिल के बुरे न थे । वे चाहते थे कि जिस तरह भी हो, अपने यजमान लाला सदानंद का रुपया अदा कर दें । उनके लिए एक-एक पैसा मोहर के बराबर था । अपना पेट काटकर बचाते मगर जब चार पैसे जमा हो जाते तो कोई न कोई ऐसा खर्च निकल आता था जिससे सारा रुपया उड़ जाता । शादीराम के हृदय पर बरछियाँ चल जाती थीं और वे कुछ कर न पाते थे ।

इसी तरह कई साल बीत गए । शादीराम ने पैसा-पैसा बचाकर अस्सी रुपए जोड़ लिए । उन्हें लाला सदानंद के पाँच सौ रुपये देने थे । इस अस्सी रूपए की रकम से ऋण उतारने का दिन आता प्रतीत हुआ । परंतु उनका लड़का लगातार चार महीने बीमार रहा । पैसा-पैसा करके बचाए हुए रुपए दवा-दारू में उड़ गए । पंडित शादीराम ने सिर पीट लिया । अब चारों ओर फिर अंधकार था उसमें प्रकाश की हलकी-सी किरण भी दिखाई न देती थी । उन्होंने ठंडी साँस भरी और सोचने लगे - क्या यह ऋण कभी सिर से न उतरेगा ?

लाला सदानंद अपने पुरोहित की विवशता को जानते थे । वे चाहते थे कि पंडितजी रुपये देने का प्रयत्न न करें । उन्हें इस रकम की जरा भी परवान न थी । उन्होंने इसके लिए कभी तगादा तक नहीं किया । इस बात से वे इतना डरते थे, मानो रुपए उन्हीं को देने हों ।

शादीराम के दिल में भी शांति न थी । वे सोचा करते कि ये कैसे भलेमानस हैं जो अपनी रकम के बारे में मुझसे बात तक नहीं करते ? खैर, ये कुछ नहीं कहते, सो तो ठीक है परंतु इसका तात्पर्य यह थोड़े ही है कि मैं भी निश्चित हो जाऊँ ? मेरी तरफ इनका रुपया निकलता है, मुझे देना ही चाहिए ।

उनमें लाला सदानंद के सामने सिर उठाने का साहस न था । यदि लाला सदानंद ऐसी सज्जनता न दिखलाते और शादीराम से बार-बार अपने पैसे माँगते तब शायद उनके दिल को ऐसा कष्ट न होता । हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं परंतु भलमनसी के सामने आँखें नहीं उठतीं ।

एक दिन लाला सदानंद किसी काम से पंडित शादीराम के घर गए । वहाँ उनकी अलमारी में कई सौ बंगला, हिन्दी और अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाएँ देखकर बोले, 'ये क्या हैं पंडितजी ?'

पंडित शादीराम ने उत्तर दिया, 'पुरानी पत्रिकाएँ हैं । बड़े भाई को पढ़ने का शौक था । वही ये पत्रिकाएँ मँगवाते थे । वे जब जीवित थे तो किसी को हाथ न लगाने देते थे । अब इन्हें कीड़े खा रहे हैं । कोई पूछता भी नहीं ।'

'रद्दी में क्यों नहीं बेच देते ?'

'इनमें चित्र हैं । जब कभी बच्चे रोने लगते हैं तो एक-आध निकालकर दे देता हूँ । इससे उनके आँसू थम जाते हैं इसलिए रद्दी में नहीं बेचता ।'

लाला सदानंद ने आगे बढ़कर कहा, 'दो-चार पत्रिकाएँ दिखाइए तो । जरा देखें, इनमें कैसे चित्र हैं ?'

पंडित शादीराम ने कुछ पत्रिकाएँ दिखाई । हर एक पत्रिका में कई सुंदर और रंगीन चित्र थे । लाला सदानंद

कुछ देर तक उलट-पलटकर देखते रहे । सहसा उनके मन में एक विचार उठा । वे बोले, 'ये चित्रकला के बढ़िया नमूने हैं । अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाएँ तो आप हजार-दो हजार रुपए बड़ी आसानी से कमा सकते हैं ।'

पंडित शादीराम ने एक ठंडी साँस भरकर कहा, 'ऐसे भाग्य होते तो यों धक्के न खाता फिरता !'

लाला सदानंद बोले, 'एक काम करें !'

'क्या ?'

'आज बैठकर जितनी अच्छी-अच्छी तसवीरें हैं, सबको अलग छाँट लें ।'

'बहुत अच्छा ।'

'जब यह कर चुकें तो मुझे कहलवा दें ।'

'आप क्या करेंगे ?'

'मैं एक अलबम बनाऊँगा और आपकी तरफ से विज्ञापन दे दूँगा । हो सकता है, यह विज्ञापन किसी शौकीन के हाथ पड़ जाए और आप दो-चार पैसे कमा लें । तसवीरें बहुत बढ़िया हैं ।'

पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोयले की खान में हीरा मिल जाएगा । घोर निराशा ने आशा के सभी द्वार बंद कर दिए थे । वे उन हतभागे लोगों में से थे जो संसार में असफल और केवल असफल रहने के लिए पैदा होते हैं । वे सोने को हाथ लगाते थे तो वह भी मिट्टी हो जाता था । वे सीधी बात भी करते थे तो उलटी पड़ती थी । उनको पक्का विश्वास था कि यह प्रयत्न भी सफल न होगा परंतु लाला सदानंद के कहने से दिनभर बैठकर तसवीरें छाँटते रहे । न उनके मन लगन थी, न उनके हृदय में चाव था, न उनके सीने में उमंग था किंतु लाला सदानंद की बात को टाल न सके । शाम को देखा, दो सौ बढ़िया चित्र जमा हो गए हैं । उस समय वे उन्हें देखकर स्वयं उछल पड़े । उनके मुख पर आनंद की आभा नाचने लगी । वे उन चित्रों की ओर इस तरह देखते मानो उनमें से हर एक दस-दस के नोट हों । बच्चों को उधर देखने तक न देते थे । वे सफलता के विचार से ही प्रसन्न हो रहे थे । यद्यपि आशा कोसों दूर थी । लाला सदानंद की दी हुई आशा उनके मस्तिष्क में निश्चय का रूप धारण कर चुकी थी । वे खुशी से झूमने लगे ।

लाला सदानंद ने चित्रों को अलबम में लगवाया और समाचार पत्रों में विज्ञापन दे दिया । अब पंडित शादीराम हर समय डाकिये की प्रतीक्षा करते रहते थे । वे रोज सोचते थे कि आज कोई चिट्ठी आएगी । दिन बीत जाता, कोई चिट्ठी न आती थी । रात को आशा, सड़क की धूल की तरह बैठ जाती थी । मगर दूसरे दिन लाला सदानंद की बातों से टूटी हुई आशा फिर जुड़ जाती थी। आशा फिर अपना चमकता हुआ मुँह दिखाकर उन्हें दरवाजे पर ला खड़ा कर देती थी । डाक का समय होता, तो वे बाजार चल पड़ते और वहाँ से डाकखाने पहुँच जाते । इसी तरह एक महीना बीत गया, कोई पत्र न आया । पंडित शादीराम बिलकुल निराश हो गए । मगर फिर भी कभी-कभी सफलता का विचार आ जाता था, जैसे अँधेरे में जुगनू चमक जाता है । जुगनू की यह चमक निराश हृदयों के लिए कैसी जीवनदायिनी, कैसी हृदयहारिणी होती है । इसके सहारे भूले हुए मुसाफ़िर मंजिल पर पहुँचने का प्रयत्न करते हैं और कुछ देर के लिए अपना दु:ख भूल जाते हैं । इस झूठी आशा के अंदर सच्चा प्रकाश नहीं होता, यह दूर के संगीत के समान मनोहर जरूर होती है । इस वर्षा की कमी दूर हो न हो परंतु इससे काली घटा का जादू कौन छीन सकता है ? पंडित शादीराम ने आशा न छोड़ी । या यों कहिए, आशा ने पंडित शादीराम को न छोड़ा । दिन गुजरते गए ।

आखिर एक दिन शादीराम के भाग्य जागे । कलकत्ते के एक मारवाड़ी सेठ ने पत्र लिखा कि अलबम भेज दो । अगर पसंद आ गया तो खरीद लिया जाएगा । मूल्य की चिंता नहीं, चीज अच्छी होनी चाहिए । यह पत्र उस करवट के समान था जो सोया हुआ आदमी जागने से पहले बदलता है और उसके बाद उठ बैठता है । यह किसी आदमी की करवट न थी, यह भाग्य की करवट थी । पंडित शादीराम दौड़े हुए सदानंद के पास पहुँचे और उन्हें पत्र दिखाकर बोले, 'आखिर आज एक पत्र आ गया है । भेज दूँ अलबम ?'

छः महीने बीत गए ।

लाला सदानंद बीमार थे । पंडित शादीराम उनके लिए दिन-रात माला फेरा करते थे । वे न वैद्य थे, न डॉक्टर और न ही हकीम । उनकी औषधि माला फेरना ही थी और वह काम वे अपनी आत्मा की पूरी शक्ति, अपने पूरे मन से कर रहे थे । उन्हें औषधि की अपेक्षा आशीर्वाद और प्रार्थना पर अधिक भरोसा था । सोचते थे, दवा से दुआ अच्छी है ।

एक दिन लाला सदानंद चारपाई पर लेटे थे । उनके पास उनकी बूढ़ी माँ उनके दुर्बल और पीले मुँह को देख-देखकर अपनी आँखों के आँसू अंदर ही अंदर पी रही थी । थोड़ी दूरी पर एक कोने में, उनकी नवोढ़ा स्त्री घूँघट निकाले खड़ी थी और देख रही थी कि कोई काम ऐसा तो नहीं, जो रह गया हो । पास पड़ी चौकी पर पंडित शादीराम बैठे, रोगी को भगवद्गीता सुना रहे थे ।

एकाएक लाला सदानंद बेसुध हो गए । पंडितजी ने गीता छोड़ दी और उनके सिरहाने बैठ गए । स्त्री गरम दूध लाने के लिए अंदर दौड़ी और माँ घबराकर बेटे को आवाजें देने लगी । इस समय पंडितजी को लगा कि रोगी के सिरहाने के नीचे कोई चुभती हुई चीज रखी है । उन्होंने नीचे हाथ डालकर देखा तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही । वह सख्त चीज वही अलबम था, जिसे किसी सेठ ने नहीं बल्कि स्वयं लाला सदानंद ने खरीदा था ।

पंडित शादीराम इस विचार से बहुत प्रसन्न थे कि उन्होंने सदानंद का ऋण उतार दिया मगर यह जानकर उनके हृदय को चोट-सी लगी कि ऋण उतरा नहीं अपितु पहले से दुगुना हो गया है ।

उन्होंने बेसुध यजमान के पास बैठे-बैठे एक ठंडी साँस भरी और सोचने लगे - यह ऋण मेरे सिर से क्या कभी न उतरेगा !

कुछ देर बाद लाला सदानंद को होश आया । उन्होंने पंडितजी से अलबम छीन लिया और धीरे से कहा, 'यह अलबम अब मैंने सेठ साहब से मँगवा लिया है ।'

पंडित जी जानते थे कि यजमान झूठ बोल रहे हैं परंतु वे उन्हें पहले से भी अधिक सज्जन, अधिक उपकारी और ऊँचा समझने लगे थे । वे यह न कह सके कि आप झूठ बोल रहे हैं । उनमें यह हिम्मत न थी । वे चुपचाप माला फेरने लगे ।

शब्दार्थ

ऋण कर्ज, उधार **अदा करना** चुकाना **विवशता** मजबूरी **परवाह** चिंता **हतभागे** अभागे, भाग्यहीन **आभा** चमक, जीवनदायिनी, जीवन देनेवाली **हृदयहारिणी** मन को लुभानेवाली **चिरंजीवी** बहुत समय तक जीवित रहनेवाला, पुत्र **वैद्य** आयुर्वेदिक चिकित्सक **दुआ** प्रार्थना, विनती, आशिष **बेसुध** बेहोश

मुहावरे

ठंडी आह भरना दु:खी होना **पेट काटकर बचाना** थोड़े खर्च में काम चलाना **हृदय पर बर्छियाँ चलाना** अत्यधिक चुभनेवाली बात कहना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) पंडित शादीराम अपना ऋण क्यों नहीं उतार पाते थे ?

(अ) वे अत्यंत गरीब थे ।

(ब) बचे हुए पैसे किसी न किसी तरह खर्च हो जाते थे ।

(क) रुपये देने की उनकी दानत ही नहीं थी ।

(ड) पैसे देने जितनी रकम इकट्ठी ही नहीं होती थी ।

(2) शादीराम पुरानी पत्रिकाएँ बेचते नहीं थे क्योंकि .....

(अ) उनकी कोई ज्यादा रकम नहीं मिल सकती थी ।

(ब) उनके भाई की अमानत थी ।

(क) उनके रोते हुए बच्चे उनमें के चित्रों को देखकर चुप हो जाते थे ।

(ड) पत्रिकाएँ उन्हें बहुत प्रिय थीं ।

(3) सदानंद के कहने पर शादीराम ने पत्रिकाओं के चित्रों का क्या किया ?

(अ) बेच दिए (ब) अलबम बनाया (क) बच्चों को बाँट दिये (ड) दीवारों पर सजा दिये

(4) पंडित शादीराम को अलबम के कितने रुपये मिले ?

(अ) एक हजार (ब) दो सौ (क) दो हजार (ड) एक सौ

(5) सदानंद का मन प्रसन्नता से नाच उठा क्योंकि .....

(अ) उन्हें अपने पैसे वापस मिल गए ।

(ब) पंडित शादीराम की उदारता और सज्जनता के कारण ।

(क) परमात्मा ने उनकी बात स्वीकार कर ली । (ड) मारवाड़ी सेठ ने अलबम खरीद लिया था ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) पंडित शादीराम के बचाए हुए अस्सी रुपये किसमें खर्च हो गये ?

(2) पंडित शादीराम पुरानी पत्रिकाएँ क्यों नहीं बेच देते थे ?

(3) सदानंद ने शादीराम को पुरानी पत्रिकाओं से क्या करने की सलाह दी ?

(4) लाला सदानंद की बीमारी के समय पंडित शादीराम किस तरह सेवा करते थे ?

(5) 'अलबम सेठ से मैंने मँगवा लिया है ।' - ऐसा सदानंद ने शादीराम से क्यों कहा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) पंडित शादीराम कर्ज अदा करने के लिए क्यों बेचैन थे ?

(2) लाला सदानंद ने शादीराम की समस्या का क्या हल निकाला ?

(3) शादीराम ने अपना कर्ज कैसे चुकाया ?

(4) पंडित शादीराम लाला सदानंद से यह क्यों न कह सके कि वे झूठ बोल रहे हैं ?

(5) शादीराम का ऋण उतरने की बजाय दुगुना क्यों हो गया ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) पंडित शादीराम के दिल में क्यों शांति नहीं थी ?

(2) पंडित शादीराम खुशी से क्यों झूमने लगा ?

(3) लाला सदानंद ने शादीराम से रुपये लेने से मना क्यों दिया ?

(4) लाला सदानंद के चरित्र पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

5. सूचनानुसार लिखिए :

(1) **पर्यायवाची शब्द दीजिए :** हाथ, आँख, ऋण, अंधकार, परमात्मा

(2) **विलोम (विरोधी) शब्द दीजिए :** ठंडी, परवाह, सज्जन, जीवित, निराशा, सफल, दया

(3) **निम्नलिखित वाक्यों में से भाववाचक संज्ञा खोजकर बताइए :**

(1) लाला सदानंद पंडितजी की विवशता को जानते थे, परंतु भलमनसी के सामने आँखें नहीं उठती थीं ।

(2) पंडित शादीराम को अब कोई आशा नहीं थी ।

(3) आपने जो दया और सज्जनता दिखाई है, उसमें मरते दम तक न भूलूँगा ।

(4) आप झूठ बोल रहे हैं ।

(4) **मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :**

(1) ठंडी आह भरना

(2) पेट काट कर बचाना

(3) भार उतारना

योग्यता-विस्तार

- अपने मित्र को उधार पैसे दिए और अब मित्रता ही नहीं रही - दो मित्रों के बीच उसकी संवाद में प्रस्तुति करवाइए ।
- 'हम अत्याचार का सामना सिर उठाकर कर सकते हैं, परन्तु भलमनसी के सामने आँख नहीं उठती ।' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

शिक्षण-प्रवृत्ति

- मानव मूल्यों के जतन करने के प्रति छात्रों को जागरुक कीजिए ।
- स्वातंत्र्य सेनानियों का तथा प्रसिद्ध खिलाड़ियों के अलबम तैयार करवाइए ।

●

21 पहेलियाँ-मुकरियाँ

अमीर खुसरो

(जन्म : सन् 1253 ई., निधन : सन् 1325 ई.)

आदिकाल की राज्याश्रय परंपरा से सर्वथा मुक्त अमीर खुसरो की कविता लोकजीवन का रंगों में रंगी हुई है । उनकी हलकी-फुलकी रचनाओं में ज्ञान के साथ-साथ मनोविनोद की सुंदर सामग्री प्रस्तुत की गई है । संकलित पहेलियाँ और मुकरियों में मानव-मन की जिज्ञासा, कुतूहल और रहस्यों का विनोदपूर्ण शैली में उद्‌घाटन किया गया है । छोटी-छोटी रचनाओं में गहरे अर्थ अभिव्यंजित कर कवि ने अपने कला-कौशल का अच्छा परिचय दिया है ।

उनकी पहेलियों में किसी वस्तु का टेढ़ा-मेढ़ा लक्षण देकर अभिप्रेत वस्तु का नाम पूछा जाता है । मुकरियों में आरंभ में कही गई बात का खंडन करते हुए सही बात की ओर संकेत किया जाता है । इन पहेलियाँ मुकरियों में विनोद के साथ ज्ञान परोसा गया है । इनके द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञान की कसौटी भी हो जाती है, साथ-साथ चिंतन और जिज्ञासा भी जाग्रत होते हैं ।

पहेलियाँ

- जूता पहना नहीं ?
  समोसा खाया नहीं ? (क्यों ?)
  उत्तर : तला नहीं था ।
- अनार क्यों न चखा ?
  वजीर क्यों न रखा ?
  उत्तर : दाना न था ।
- रोटी जली क्यों ?
  घोड़ा अड़ा क्यों ?
  पान सड़ा क्यों ?
  उत्तर : फेरा न था ।
- एक नारि के हैं दो बालक, दोनों एक ही रंग ।
  एक फिरे एक ठाढ़ा रहै, फिर भी दोनों संग ॥
  उत्तर : चक्की के पाट

मुकरियाँ

- जब माँगू तब जल भरि लावे
  मेरे मन की तपन बुझावे
  मन का भारी तन का छोटा
  ए सखि साजन ? ना सखि लोटा । **उत्तर :** लोटा
- वो आवे तो शादी होय
  उस बिना दूजा और न कोय
  मीठे लागे वा के बोल
  ए सखि साजन ? ना सखि ढोल । **उत्तर :** ढोल
- अति सुरंग है रंग-रंगीले
  है गुणवंत बहुत चटकीला
  राम-भजन बिन कभी न सोता
  ए सखि साजन ? ना सखि तोता । **उत्तर :** तोता

शब्दार्थ

अनार एक दानेदार फल, दाडम (गुज.) **वजीर** मंत्री **अड़ना** रुक जाना **ठाढ़ा** खड़ा **तपन** आग **साजन** पति **दूजा** दूसरा **गुणवंत** गुणवान

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) 'तला' शब्द के दो अर्थ बताइए ।
(2) 'वजीर में दाने नहीं थे' क्या अर्थ है ?
(3) ढोल और साजन में क्या समानता है ?
(4) राम भजन बिना कौन नहीं सोता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) न फेरने पर रोटी, घोड़े और पान की क्या हालत होती है ?
(2) चक्की के दो पाटों की क्या विशेषता बताई हैं ?
(3) लोटा क्या-क्या करता है ?

योग्यता-विस्तार

- किसी भी वस्तु को लेकर पहेलियाँ बनाने की, बुझाने की और सुलझाने की प्रवृत्ति कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- अपनी भाषा में पहेलियाँ बनाइए ।
- अमीर खुसरो की कुछ अन्य पहेलियाँ ढूँढ़िए ।

●

22 भीतरी समृद्धि

डॉ. चन्द्रकान्त मेहता
(जन्म : सन् 1939 ई.)

गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डॉ. चन्द्रकान्त मेहता बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । डॉ. मेहता की मातृभाषा गुजराती है किन्तु संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी पर भी उनका समान अधिकार है । लगभग 50 वर्षों से हिन्दी एवं गुजराती लेखन के प्रति समर्पित डॉ. मेहता की गुजराती एवं हिन्दी में कई रचनाएँ प्रकाशित हैं ।

'साथ-साथ चल रही किरन' निबंध संग्रह पर भारत सरकार ने उन्हें नेशनल अवोर्ड से सम्मानित किया है एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ ने गुजराती हिन्दी की सेतु रूप सेवाओं के लिए 'सौहार्द-सम्मान' दिया है । अन्य कृतियों में 'दिया जलाना कब मना है', 'दिशान्तर जरा ठहर जाओ', 'अन्वेषक और अन्य' आदि प्रमुख हैं ।

प्रस्तुत निबंध में चाहे जितना धन कमाओ, चाहे ऊँचे महल बनाओ, ऐशो-आराम की जिंदगी में भौतिक सुख तो अवश्य मिलता है, सोने-चाँदी के गहनों-आभूषणों से लद जाओ पर जब तक भीतरी शांति नहीं मिलती तब तक जीवन व्यर्थ है । सुख पैसे रुपयों से नहीं मिलता । जीवन का सुख उदारता और त्याग में समाया है ।

जब 'द्रव्य-भक्ति' बढ़ जाती है तब जीवन-भक्ति कम हो जाती है । जब लोग अमीर बनने के कृत्रिम चाव में फँस जाते हैं तब अंत:करण की अमीरी की सुगंध खो देते हैं । तृष्णा तो परंपरागत डाकूरानी होती है । जब तृष्णाएँ बढ़ती हैं तो मनुष्य की नेकी के समाप्त होने में देरी नहीं लगती ।

मनुष्य के लिए जीना कोई मुश्किल काम नहीं है, हाँ, पर पवित्रतापूर्वक जीना अवश्य ही मुश्किल है । धन सुख का जादूगर भी है और शांति का डकैत भी । अभी तक किसी कोई भी दरजी ऐसा अँगरखा नहीं सिल पाया है जिसे पहनकर तृष्णातुर मनुष्य चैन की साँस ले सके ।

कहा जाता है कि पोम्पीनगर के खंडहरों में खुदाई करते हुए एक नर-कंकाल प्राप्त हुआ था । उसकी मुट्ठी खोलने में काफी परेशानी हुयी थी । मुट्ठी खुलने के बाद पता चला कि मृत व्यक्ति ने अपने हाथ में सोना पकड़ रखा था । इसी प्रकार इसी शहर के एक व्यापारी ने अपनी अंतिम साँस लेते समये तकिये के नीचे से पैसों से भरी हुई एक थैली बाहर निकाली थी तथा अपने प्राण त्यागने के समय तक उसे खूब मजबूती से अपने हाथ में पकड़ रखी थी ।

हमारे यहाँ पहले डाल-डाल पर सोने की चिड़ियाँ रहती थीं । आज अमीरों की पारिवारिक समस्याओं को दर्शाते हुए धारावाहिकों की 'मानव-चिड़ियाँ' गहनों से लदीफदी रहती हैं । घर के भीतर गहनों से सजी-सँवरी और खूब महँगी-महँगी साड़ियों में रौब से घूमती अभिमानी स्त्रियाँ संस्कारिता की धज्जियाँ उड़ाती हुई बेहूदे षड्यंत्रों में संलग्न रहती हैं । इनमें भारतीयता का तिलमात्र भी दर्शन होता है क्या ? पहले त्याग द्वारा आनंद की प्राप्ति होती थी पर अब 'भोगने के बाद फेंक देना' मूलमंत्र हो गया है ।

आज के जीवन में धन ही जीवन का नियंत्रक परिबल बन गया है अत: आज के मनुष्य की वृत्ति व प्रवृत्ति दोनों ही भ्रष्ट हो गयी हैं । अमीर को और अधिक अमीर बनने के लिए धन की प्यास है जबकि गरीब को अपना तन ढकने के लिए रुपयों की जरूरत है । गरीब स्वयं खून-पसीना एक करके धन कमाता है जबकि अमीर दूसरों को उल्लू बनाकर धन कमाता है । यदि गरीब अपने 'गहने' को संभाल सके तो, उसका गहना तो केवल स्वाभिमान ही है ।

जब तक पैसे की खोज नहीं हुयी थी तब तक मनुष्य अंदर से अमीर था । एक लेखक के शब्द ध्यान देने योग्य हैं । वह कहता है - 'सहृदयता, आत्मीयता, आशा, उल्लास तथा प्रेम ही वास्तविक धन हैं । इस पृथ्वी के एक छोटे से अंश को पाने के लिए मुझे इतना सख्त परिश्रम करने की आखिर क्या आवश्यकता है ? समग्र पृथ्वी ही तो मेरी है । अगर कायदे-कानून की भाषा में यह पृथ्वी किसी और की कहलाती है तो इसमें इतनी ईर्ष्या क्यों करनी चाहिए ? यह उसी की संपत्ति है जो इसका उपयोग कर पाता है । अत: संपत्ति के मालिकों से मुझे क्यों ईर्ष्या करनी चाहिए ? मैं रेल का किराया देकर देशभर की सैर कर सकता हूँ । मेरा मन हो तो ताजगीभरी सुंदर हरी घास, छोटे-बड़े पौधे, मैदानों में लगे कीर्ति-स्तंभ तथा सुंदर बारीक कारीगरी वाले शिल्प व सुंदर चित्रों का आनंद ले सकता

हूँ । उन सब को अपने साथ घर ले जाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि जहाँ पर ये सब हैं, वहाँ उनकी देखभाल व उनकी व्यवस्था जितनी अच्छी तरह से की गयी है, उससे आधी देखभाल भी मैं नहीं कर पाऊँगा । इस सृष्टि ने मुझे इस प्रकार की अनेक चीजें प्रदान की हैं । वन में घूमते हुए प्राणी हमारे हैं, नक्षत्र तथा महकते हुए फूल हमारे हैं । समुद्र, हवा, पक्षी तथा वृक्ष भी हमारे हैं । अब हमें दूसरी किसी चीज की आवश्यकता नहीं है । इस युग से पहले के सभी युग हमारे लिए काम करके गये हैं । हमें तो केवल अन्न व वस्त्र प्राप्त करने की आवश्यकता है और ये प्राप्त करना इस धरती पर बहुत आसान है ।'

वाल्मिकी, स्वामी रामतीर्थ, विवेकानंद, दयानंद, अरविंद के पास आखिर कौन-सा जमा किया हुआ धन था ? फिर भी क्या हम उन्हें गरीब कहने की हिम्मत कर सकते हैं ?

'भाग्य के स्रष्टाओं' में जॉन डंकन नामक एक स्कॉटलैंड के निवासी बुनकर के गरीब पुत्र की अमीरी का एक प्रेरणादायक उदाहरण है । जॉन बिलकुल अनपढ़, संकुचित दृष्टि का अशक्त, कुबड़ा तथा आर्थिक दृष्टि से कंगाल परिवार का पुत्र था । जब वह अपने मुहल्ले में से गुजरता था तब बच्चे उसे चिढ़ाते थे । बहुत बार तो पत्थर भी मार दिया करते थे । उसने ढोर चराने का काम शुरू किया तो उसके मालिक ने भी उसके साथ अत्याचार किया । कभी-कभी जॉन कपड़ों को निचोड़ते-निचोड़ते ठंड में काँपते-काँपते पूरी रात गुजार देता । एक दिन जॉन की इच्छा हुई कि वह पढ़ाई करना सीखे । कुछ समय के पश्चात् जब वह बुनाई के काम पर गया, तब उसने स्कूल में पढ़नेवाली एक बारह वर्ष की लड़की से उसे पढ़ाने की विनती की । सोलह वर्ष की उम्र में जॉन ने मूल अक्षर सीखने शुरू किये और इसके बाद तो वह खूब जल्दी से लिखना-पढ़ना सीखता ही गया । पहले से जंगल में इधर-उधर भटकने के कारण उसे वनस्पतियों की काफी अच्छी जानकारी थी । उसने वनस्पतिशास्त्र का एक ग्रंथ खरीदने के लिए पाँच शिलिंग जमा करने के लिए खूब जी तोड़ मेहनत से काम किया तथा वनस्पतिशास्त्र का गहरा अध्ययन करके उस विषय का पंडित बन गया । अब उसे पढ़ाई में इतनी अधिक रुचि हो गयी थी कि अस्सी वर्ष की वृद्धावस्था में भी एक पौधे को प्राप्त करने के लिए उसने बारह मील की पैदलयात्रा की थी । उसका शरीर दुर्बल था और जीर्ण-शीर्ण पहनावा, पर उसके दिमाग की करामात अद्‌भुत ! एक बार उसे एक अमीर आदमी मिला । जब उसे पता चला कि बाहर से एकदम साधारण सा दिखनेवाला जॉन वनस्पतिविज्ञान का महापंडित है, तो वह इस पर फिदा हो गया और उसने उसका जीवन-चरित्र अखबार में छपवा दिया । उसके बारे में पढ़कर बहुत से लोगों ने जॉन के पास काफी बड़ी-बड़ी रकम के चैक भेजे । परंतु उसने इस धन को अपने लिए प्रयुक्त नहीं किया और अपने वसीयतनामे में लिखा - ''मुझे प्राप्त सारी धन-राशि का उपयोग गरीब विद्यार्थियों के प्राकृतिक विज्ञान के अध्ययन के लिए किया जाय तथा उनको प्रोत्साहन देने के लिए 'स्कोलरशिप' तथा 'पारितोषिक' भी दिये जाएँ ।'' जॉन ने कीमती पुस्तकों का अपना ग्रंथालय भी आम लोगों के उपयोग के लिए दान में दे दिया था ।

भारत के अनेक महापुरुष भी इसी प्रकार गरीबी, अभाव तथा कठिनाइयों के दलदल में खिलने वाले कमल हैं । अपने-अपने क्षेत्रों में इन्होंने मूल्यवान प्रदान दिये हैं । धन के लिए उन्होंने धर्म (कर्तव्यपरायण) को लज्जित नहीं किया है । द्रव्य के लोभ में अपनी नीयत खराब नहीं की है । पद के लिए प्रतिष्ठा के साथ छेड़छाड़ नहीं की है ।

मनुष्यत्व अर्थात् उदारता तथा उदात्तता के प्रयोग के लिए प्राप्त हुआ दैवीय वरदान ! इसीलिए मुंशी प्रेमचंद ने कहा था कि मनुष्य यदि उदार बनता है तो देवदूत और यदि नीच बनता है तो शैतान । सोक्रेटिस के मतानुसार दुनिया में सम्मानपूर्वक जीने के लिए सबसे सरल और आवश्यक उपाय है कि आप अपने आपको जैसा बाहर से दिखाना चाहते हैं, वैसा ही भीतर भी बनें । वास्तव में मनुष्य स्वयं का ही विरोधी है । हम अपने सद्‌गुणों को स्वार्थ की बेआवाज बुलट से छलनी करते रहते हैं .... जीवनभर ! बाहर ही नहीं, अंदर से श्रीमंत अथवा अमीर बनना ही पैसा पचाने की कला है ।

शब्दार्थ

द्रव्यभक्ति धनलोभ **तृष्णा** लोभ, इच्छा, अपेक्षा **चैन** शांति **रौब** गर्व, अभिमान **शिलिंग** ब्रिटिश पौंड से छोटी मुद्रा **जीर्ण-शीर्ण** जर्जर **बुलट** बंदूक की गोली

मुहावरें

चैन की साँस लेना शांति होना **खून-पसीना एक करना** सख्त परिश्रम करना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) किसके बढ़ने पर जीवन-भक्ति कम हो जाती है ?

(अ) द्रव्य-भक्ति (ब) तरल-भक्ति (क) धन-भक्ति (ड) प्रभु-भक्ति

(2) पोम्पीनगर के खंडहरों से मिले एक नर-कंकाल की मुट्ठी में क्या था ?

(अ) चाँदी (ब) सोना (क) मोती (ड) हीरा

(3) मनुष्य अंदर से कब तक अमीर था ?

(अ) विज्ञान की खोज नहीं हुई थी तब तक (ब) टी.वी. को खोज नहीं हुई थी तब तक

(क) टेलिफोन की खोज नहीं हुई थी तब तक (ड) पैसों की खोज नहीं हुई थी तब तक

(4) इनमें से वनस्पतिविज्ञान का महान पंडित कौन बन गया ?

(अ) विवेकानंद (ब) दयानंद (क) डंकन (ड) श्री अरविंद

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) लोग अंत:करण की अमीरी की सुगंध कब खो देते हैं ?

(2) सुख का जादूगर और शांति का डकैत कौन-सा है ?

(3) आज जीवन का नियंत्रक परिबल कौन है ?

(4) अमीर धन कैसे कमाता है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) तृष्णा को परंपरागत डाकूरानी क्यों कहा गया है ?

(2) व्यापारी ने अपनी अंतिम साँस लेते समय रुपयों की थैली मजबूती से हाथ में क्यों पकड़ रखी थी ?

(3) आज वास्तविक धन कौन-कौन-से गुण में हैं ? क्यों ?

(4) आज मनुष्य की वृत्ति व प्रवृत्ति दोनों ही भ्रष्ट क्यों हो गई है ?

(5) डंकन के जीवन से क्या संदेश मिलता है ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) पोम्पीनगर के खंड़हरों के कंकाल और एक व्यापारी के हाथ में अंतिम समय तक क्या था ? क्यों ?

(2) डंकन वनस्पतिशास्त्र का महापंडित कैसे बना ?

(3) भारत के महापुरुषों को कीचड़ में खिलने वाले कमल क्यों कहा है ?

(4) 'बाहर ही नहीं अंदर से श्रीमंत अथवा अमीर बनना ही पैसा पचाने की कला है ।' समझाइए ।

5. निम्नलिखित कथनों को समझाइए :

(1) 'धन सुख का जादूगर भी है और शांति का डकैत भी ।'

(2) 'पहले त्याग द्वारा आनंद की प्राप्ति होती थी पर अब भोगने के बाद फेंक देना' - मूल मंत्र हो गया है ।

(3) 'आज जीवन में धन ही जीवन का नियंत्रक परिबल बन गया है ।'

6. सूचनानुसार लिखिए :

(1) **मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :** चैन की साँस लेना, खून-पसीना एक करना

(2) **दिए गए शब्दों के विशेषण बनाइए :** अमीर, परिवार, अभिमान, परिश्रम, दिन, दर्शन

(3) **दिए गए शब्दों से भाववाचक बनाइए :** मनुष्य, डाकू, व्यक्ति, दुर्बल, लज्जा

योग्यता-विस्तार

- वाल्मीकि, स्वामी रामतीर्थ, विवेकानंद के जीवनकार्य की जानकारी एकत्रित कीजिए ।
- 'भीतरी-समृद्धि' पर वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'जीवन में धन से ज्यादा महत्त्व गुणों का है ।' इस कथन को समझाइए ।

●

23 भूख

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(जन्म : सन् 1926 ई., निधन : सन् 1983 ई.)

नई कविता के इस प्रमुख कवि का जन्म बस्ती (उ.प्र.) में हुआ । आर्थिक अभावों से जूझते हुए इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एम.ए. किया । स्कूल में शिक्षक, क्लर्क की और आकाशवाणी में नौकरी की । बाद में 'दिनमान' के उपसम्पादक रहे ।

इनकी कविताओं में आधुनिक जीवन की विडंबना, विषम स्थिति में भी व्यक्ति की जिजीविषा आदि का मार्मिक चित्रण मिलता है । 'जंगल का दर्द', 'कुआनो नदी', 'गर्म हवाएँ', 'खूटियों पर टँगे लोग', 'क्या कह कर पुकारूँ', 'कोई मेरे साथ चले' आदि इनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं । इनकी रचनाएँ 'तीसरा सप्तक' में भी संकलित हैं । 'बतूता का जूता' बाल कविताओं का अनूठा संग्रह है । इन्होंने नाटक भी लिखे हैं ।

प्रस्तुत कविता में कवि ने सौन्दर्य को वैयक्तिक रुचि से हटाकर संघर्षशीलता के साथ जोड़ दिया है ।

जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है ।
झपटता बाज,
फन उठाये साँप,
दो पैरों पर खड़ी
काँटों से नन्हीं पत्तियाँ खाती बकरी,
दबे पाँव झाड़ियों में चलता चीता,
डाल पर उल्टा लटक
फल कुतरता तोता,
या इन सबकी जगह
आदमी होता ।
जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है ।

शब्दार्थ

बाज़ एक शिकारी पक्षी

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने प्राणियों में सौन्दर्य कब देखा है ?

(2) कवि के अनुसार बकरी में सुन्दरता कब प्रकट होती है ।

(3) कवि ने भूख की दशा को क्यों सुन्दर कहा है ?

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

जब भी
भूख से लड़ने
कोई खड़ा हो जाता है
सुन्दर दीखने लगता है

प्रवृत्ति

- इस कविता के साथ बच्चन जी की 'बंगाल का अकाल' कविता ढूँढ़कर पढ़िए ।

●

प्रयोजनमूलक हिन्दी

संचार माध्यम

प्राचीन काल में मनुष्य का जीवन सीमित दायरे में बीत जाता था । उसे अपने इर्द-गिर्द घटनेवाली छोटी-बड़ी घटनाओं का ही पता चलता था । उस समय उनका विश्व अत्यंत छोटा था । धीरे-धीरे उसने समूह बनाया और अधिक जानकारी पाने का प्रयास किया ।

अपनी जानकारी दूसरों तक पहुँचाने के लिए प्राणियों का उपयोग होता था । धीरे-धीरे बैलगाड़ी, घोड़ों का उपयोग होने लगा । यंत्रयुग से जानकारी को फैलाने के अवसर बढ़ने लगे । साइकिल, मोटर, ट्रक से अब जानकारी दूर-दूर तक भेजी जाती थी ।

यंत्र में मुद्रण कला का प्रवेश होते ही छपी सामग्री से समाचार, कला, कथा इत्यादि का प्रचार-प्रसार होने लगा ।

पिछले कुछ वर्षों में संचार के माध्यमों में छपाई के साथ साथ डिजिटल स्वरूप में साहित्य फैलने लगा है । उपग्रहों के माध्यम से टीवी, दूरदर्शन, आकाशवाणी, फैक्स, ई-मेल, मोबाइल, डाक व्यवस्था इत्यादि में काफी प्रगति हुई । कम्प्यूटर का युग प्रगति करता गया । अब इन्टरनेट का जमाना आ गया । क्षणभर का भी समय नहीं लगता और समाचार की घटनाएँ दिखाकर एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँचाई जाती हैं ।

आज हम कुछ प्रचार-प्रसार माध्यमों के बारे में बात करेंगे ।

समाचार पत्र

समाचार पत्र जनसंचार का मुद्रित माध्यम है । मनुष्य सदा अपने इर्द-गिर्द होनेवाली घटनाओं से परिचित होना चाहता है । अत: समाचार पत्र, समाचार टीवी चैनल, मोबाइल जैसे साधनों का आजकल अत्यधिक उपयोग होता है ।

समाचार पत्र तो हमारे जीवन का अभिन्न अंग हो गया है । प्रारंभ में समाचार पत्रों का उपयोग सेना के लिए होता था । आज शिक्षा, खेल, मनोरंजन, साहित्य, विज्ञापन आदि के लिए समाचार पत्र उपयोगी है । हर सुबह मुद्रित रूप में समाचार हमारे सामने समाचार पत्र के रूप में आते हैं । समाज के विकास में समाचार पत्रों की अहम् भूमिका है ।

समाचार पत्रों का ब्रिटिश शासन में बड़ा महत्त्व था । भारत में 'बंगाल गजट' हिन्दुस्तान टाइम्स, नेशनल हेराल्ड, पायोनियर, मुंबई मिरर जैसे समाचार पत्र अंग्रेजी में निकलते थे । इनके साथ बंगला और उर्दू में भी समाचार पत्र निकले थे । हिन्दी में समाचार पत्र सबको एकसूत्र में बाँधनें में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए । लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' का संपादन किया । लाला लजपत राय ने 'वन्दे मातरम्' पत्र निकाला । आज़ादी के आंदोलनों में इन समाचार पत्रों का योगदान बहुत बड़ा था । गणेश शंकर विद्यार्थी ने 1913 में कानपुर से साप्ताहिक 'प्रताप' का प्रकाशन आरंभ किया था । लोगों को आज़ादी के लिए तैयार करने में इन समाचार पत्रों का महत्त्व था । ये आज़ादी का हथियार सिद्ध हुए । गांधीजी ने 'हरिजन' तथा 'यंग इंडिया' का प्रकाशन किया । मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने 'अल हिलाल' पत्र का प्रकाशन किया । यह लोगों से प्रत्यायन का प्रबल साधन था । हिन्दुस्तान की सही तसवीर उन दिनों कैसी थी, इसका पता इन समाचार पत्रों से हमें चलता है ।

आकाशवाणी

'आकाशवाणी' भारत के सरकारी रेडियो प्रसारण सेवा का नाम है । आकाश से सुनाई जानेवाली वाणी जो विशेष यंत्रों द्वारा ध्वनि तरंगों के माध्यम से कार्यक्रमों के रूप में प्रसारित की जाती है । रेडियो यंत्र द्वारा उसकी तरंग लंबाई को पकड़ कर सुनी जाती हैं ।

सन् 1901 में मारकोनी नामक वैज्ञानिक ने रेडियो का आविष्कार किया था । इसकी सहायता से देश-विदेश में होनेवाले कार्यक्रम सुन सकते हैं ।

ऑल इंडिया रेडियो, बी.बी.सी. लंदन जैसी संस्थाएँ समाचार, हवामान तथा कार्यक्रम का प्रसारण करती हैं । रेडियो फ्रीक्वेंसी के माध्यम से हम उसे सुन सकते हैं ।

अब रोडियो द्वारा हम गीत, समाचार अन्य कार्यक्रम तथा विज्ञापन सुनते हैं ।

दूरदर्शन (टी.वी.)

सन् 1926 में जे.एल.बेयर्ड ने लोगों को टेलीविजन की भेंट दी । यह रेडियो का ही एक विकसित रूप है । भारत में 1959 में दिल्ली में पहला दूरदर्शन केंद्र स्थापित किया गया । यह दृश्य-श्राव्य माध्यम है ।

दूरदर्शन से प्रसारित कार्यक्रम सेटेलाइट की सहायता से टी.वी. सेट के माध्यम से हम घर में छोटे पर्दे पर देख सकते हैं । पहले प्रसारण केंद्र कम थे अब सेटेलाइट की संख्या बढ़ी, केन्द्रों की संख्याएँ बढ़ीं । सभी केंद्र नाटक, संगीत, कला, सांस्कृतिक कार्यक्रम, समाचार, खेल-कूद, फिल्म इत्यादि का प्रसारण करते हैं । धार्मिक चैनल धर्म प्रचार

करते हैं । टीवी के सामने समुचित समय एवं रुचिकर, आनंददायक, बुद्धिगम्य निश्चित कार्यक्रम ही देखने का औचित्य रखना चाहिए वर्ना आँखें कमजोर हो सकती हैं । शैक्षणिक कार्यक्रमों से पढ़ाई में मन लगता है तथा रुचिकर प्रस्तुति के कारण लाभ होता है ।

STD, ISD, PCO

STD का पूरा नाम है - Subscriber trunk dialing

ISD का पूरा नाम है - International Subscriber Dialing

PCO का पूरा नाम है - Public Call Office

PCO द्वारा अपने इलाकों में तथा निश्चित विस्तार में टेलीफोन द्वारा निश्चित व्यक्ति का कॉल नंबर डायल करके बात कर सकते हैं । कुछ लोग अपना प्राइवेट (निजी) फोन डिवाइस (साधन) रखते थे । पर PCO द्वारा कोई भी व्यक्ति अपने परिचित से फोन से बात कर सकता है ।

STD में विस्तार का एक कोड नंबर दिया जाता है । उसको सबसे पहले मिलाकर बाद में उपभोक्ता का नंबर लगाकर बात की जाती है । जनता की सुविधा के लिए STD, PCO की व्यवस्था डाक विभाग से की गई थी कोई भी व्यक्ति इसका यूनिट खरीदकर PCO खोल सकता है । स्थानीय तथा अन्य राज्यों में बात कर सकता है । हर शहर, राज्य का अलग कोड होता है ।

ISD में इंटरनेशनल बात करने की सुविधा होती है । कोड मिलाकर किसी भी देश के निवासी उपभोक्ता से बात की जा सकती है । इससे कम खर्च में विदेश में स्थित सगे-संबंधी तथा कारोबार के लिए बातचीत की जाती थी । अब मोबाइल के युग में शीघ्र विकास के कारण इसका प्रचलन कम हो गया हैं । ये संचार के माध्यम अब कम प्रयोग में दिखाई देते हैं ।

कम्प्यूटर (Computer)

कम्प्यूटर के लिए हिन्दी में संगणक शब्द का प्रयोग होता है । कम्प्यूटर मनुष्य के मस्तिष्क की तरह, किन्तु इससे भी अधिक तेजी से वह गणितीय रचनाओं, आँकड़ों के विश्लेषण आदि के साथ-साथ प्राप्त सामग्री को अपनी स्मृति इकाई में भी संचित करता है । आजकल संगणक का जो रूप हमें देखने को मिलता है वह न्यमैन नामक वैज्ञानिक की देन है । सन् 1642 में ब्लेन पास्कल नामक वैज्ञानिक ने यांत्रिक संगणक का आविष्कार किया था । संगणक का मूल इसमें देखा जा सकता है बेरान गाट, फिक्ड ने कम्प्यूटर में अनेक संशोधन किए । बाद में सन् 1833 में चार्ल्स बेवेज ने एक विशेष किस्म के मशीन का आविष्कार किया, जो 'एरिथमेटिक, आउटपुट एवं कंट्रोल संबंधी व्यवस्था थी । इस दृष्टि से चार्ल्स बेवेज को आधुनिक कम्प्यूटर का पिता कहा जा सकता है ।

आज कम्प्यूटर जगत में वैविध्यपूर्ण एवं विशिष्ट कार्य करनेवाले अनेकविध कम्प्यूटर उपलब्ध हैं । इन कम्प्यूटरों को मोटे तौर पर मनफ्रेम कम्प्यूटर, मिनी कम्प्यूटर तथा माइक्रो कम्प्यूटरों के अंतर्गत विभाजित किया गया है । आजकल विज्ञान, वाणिज्य, स्वास्थ्य, संगीत, पत्रकारिता सहित सरकारी, अर्ध सरकारी एवं निजी कंपनियों समाचार पत्रों, दूरदर्शन, आकाशवाणी, संचारसेवा, परिवहन आदि सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर का उपयोग बड़े पैमाने से होता है । संचार क्रांति में कम्प्यूटर की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है ।

डी.टी.पी. (Desk Top Publishing)

अन्य क्षेत्रों की तरह मुद्रण एवं प्रकाशन जगत में भी जबरदस्त क्रान्ति हो गई है । डी.टी.पी. के आविष्कार के साथ अब कम्पोजिंग का सारा कार्य एक मेज पर करना मुमकिन हो गया है । पर्सनल कम्प्यूटर पर विशेष प्रकार के सॉफ्टवेयर की मदद से डिस्क-कार्ड लगाकर या प्रकाशक आदि सॉफ्टवेयर के प्रयोग से टंकित सामग्री को विभिन्न पृष्ठों में विभाजित करना सरल हो गया है । वर्तनी जाँच (Spell Check) की मदद से टंकित सामग्री संशोधित की जा सकती है । सामान्य कम्प्यूटरों के साथ उपलब्ध डॉट मेट्रिक प्रिन्टर (बिन्दु-मुद्रक) पर बढ़िया किस्म की छपाई नहीं होती । इसलिए लेजर प्रिन्टर का प्रयोग किया जाता है । कलर प्रिन्टर की मदद से रंगीन छपाई भी संभव हो चुकी है ।

ई-मेल (E-mail)

ई-मेल का अर्थ है - इलेक्ट्रोनिक मेल - यह एक ऐसी प्रक्रिया या पद्धति है जो दो कम्प्यूटर्स युजर्स के बीच संदेश व्यवहार का कार्य करते हैं । 1960 से 1970 तक इस प्रकार की संदेशा व्यवहार की पद्धति में अनेक रूप से परिवर्तन हुए इस समय जो इलेक्ट्रोनिक्स मेल की प्रक्रिया हुई उसे ई-मेल के रूप में जाना जाता है ।

इन्टरनेट के माध्यम से यह प्रक्रिया होती है । कुछ समय पहले दोनों कम्प्यूटर युजर्स - होना जरूरी था । आज यह ई-मेल व्यवस्था स्टोर एड, फार्वर्ड मोडेल पर निर्भर है । ई-मेल सर्वर संदेश को स्वीकार कर, फोर्वर्ड कर डिलीवर करते हैं तथा स्टोर करते हैं । इसलिए भेजनेवाला या पानेवाला कम्प्यूटर का Online होना अब जरूरी नहीं ।

●

पत्र-लेखन

पत्र-लेखन एक कला है । अच्छे पत्रों में सहजता, आत्मीयता एवं अपनापन होता है । पत्र की भाषा प्रसंगानुसार होनी चाहिए । पत्रों में शिष्टाचार का निर्वाह होना अत्यंत आवश्यक है । पत्र-लेखन का इतिहास बहुत पुराना है । विचारों के आदान-प्रदान का यह एक उत्तम साधन है । पत्रों से मैत्री बनाना सरल होता है । पत्र-मित्र बनाकर हम देश-विदेश में नये मित्र बना सकते हैं । पत्र एक दस्तावेज के रूप में संग्रहीत किए जा सकते हैं ।

राजपूत सामंत पृथ्वीराज का राजा प्रताप को लिखा पत्र, कर्मवती का हुमायूं को सहायता के लिए लिखा पत्र, जवाहरलाल के प्रियदर्शिनी को लिखे गए पत्र, गांधीजी, गालिब, महावीर प्रसाद द्विवेदीजी के पत्र दस्तावेज बन गए हैं ।

पत्र निजी या व्यक्तिगत होते हैं, व्यावसायिक पत्र तथा सरकारी एवं अर्धसरकारी पत्र ये तीन प्रकार के पत्र पाये जाते हैं ।

पत्र के प्रमुख अंगों पर ध्यान देना चाहिए, जो इस प्रकार हैं :

- **पत्र लिखनेवाले का पता एवं दिनांक :** जो पत्र की दाहिनी ओर लिखा जाता है, अब कम्प्यूटर के युग में सुविधा के लिए इसे बायीं ओर भी रखा जाता है ।
- **संबोधन :** निजी या व्यक्तिगत पत्रों में संबोधन तथा अन्य पत्रों के संबोधन में अंतर होता है ।

निजी पत्रों में बड़ों के प्रति आदरसूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है । जैसे - पूज्य, परमपूज्य, आदरणीय श्रद्धेय, पूजनीय, मान्यवर, माननीय, पूज्या, पूजनीया.... इत्यादि । छोटों के प्रति प्रेम व्यक्त करने के लिए प्रिय भाई, मित्रवर, प्रिय मित्र, बन्धुवर, चिरंजीव... इस प्रकार संबोधन होते हैं व्यावसायिक या सरकारी पत्रों में प्रति के बाद उनके होद्दों के अनुसार संबोधन होता है ।

- **पत्र का विषय :** व्यावसायिक पत्रों में इसका विशेष उपयोग होता है ।
- **अभिवादन :** सरकारी या व्यावसायिक पत्रों में अभिवादन की परंपरा नहीं है । व्यक्तिगत पत्रों में प्रणाम, नमस्कार, सादर वंदन, चरणस्पर्श, नमस्ते .... इत्यादि से अभिवादन किया जाता है ।
- **पत्र का मुख्य भाग :** यह हिस्सा पत्र की जान है, व्यक्तिगत पत्रों में कुशल समाचार के बाद पत्र में मुख्य बात विशिष्ट शैली, भाषा में व्यक्त होती है । पत्र-लेखक का सहज परिचय भाषा से होता है ।

व्यावसायिक एवं सरकारी पत्रों में नपे-तुले शब्दों में विषय को औपचारिक रूप से लिखा जाता है ।

- **हस्ताक्षर के पूर्व प्रयुक्त शब्दावली :** व्यक्तिगत पत्रों में संबंधानुसार बड़ों को लिखे पत्रों में आज्ञाकारी, आपका सेवक, कृपाकांक्षी, स्नेहभाजन; छोटों को शुभचिंतक, शुभेच्छक, शुभाकांक्षी आदि लिखा जाता है ।

आवेदन पत्रों में भवदीय, प्रार्थी या निवेदक लिखा जाता है । अंत में प्रेषक का नाम लिखा जाता है ।

- **पता :** पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र या लिफाफे पर योग्य ढंग से पता लिखना चाहिए ।
  - पहले पानेवाले का नाम ।
  - मकान का नंबर ।
  - मुहल्ला या सोसायटी, कॉलोनी का नाम ।
  - सीमा चिह्न रूप स्थान या विस्तार ।
  - रास्ता-विशेष का नाम ।
  - नगर या गाँव का नाम तथा पिन कोड नंबर ।

इन बातों को क्रमशः लिखना चाहिए । गाँव या शहर का नाम बड़े या बोल्ड अक्षरों से लिखने से डाक कर्मचारी को सुविधा रहती है ।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए पत्र लिखने से आप अपनी पत्र-लेखन कला का विकास कर सकते हैं ।

●

पत्राचार

मनुष्य अपने भावों एवं विचारो को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा का लिखित एवं मौखिक प्रयोग करता है । पत्र लिखकर हम अपने भावों, विचारों, सूचनाओं, संदेशों, आदेशों आदि को दूसरों तक पहुँचा सकते हैं । डाक विभाग की मदद से हम इन पत्रों को दूर-सुदूर तक पहुँचा सकते हैं । निजी संबंधों में हम आत्मीयतापूर्ण ढ़ंग से पत्र लिखकर अपनी बात नाते-रिश्तेदार, स्नेही-स्वजनों और मित्रों को पहुँचा सकते हैं । ऐसे पत्रों को अनौपचारिक पत्र कहते हैं । सरकारी, प्रशासनिक एवं कार्यालयों को लिखे जानेवाले पत्र औपचारिक पत्र कहे जाते हैं । आवेदन पत्र, शिकायती पत्र इसी श्रेणी में आते हैं । यहाँ प्रस्तुत औपचारिक पत्र के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं ।

उदाहरण 1 : निजी टेलीफोन का कनेक्शन कटने की शिकायत

(सूचना : क्रमानुसार ढाँचे के अनुसार ड्राफ्टिंग किया जाए ।)

सिद्धार्थ महेता
159, सत्याग्रह छावनी-6
आंबावाड़ी,
अहमदाबाद-380015

दिनांक : 10-08-2016

सेवा में,
कार्यपालक अभियंता,
भारत संचार निगम लिमिटेड
साबेना एपार्टमेन्ट,
मा. जे. ग्रंथालय के सामने,
एलिसब्रिज,
अहमदाबाद-380006

विषय : निजी टेलीफोन कनेक्शन कटने के बारे में ।

महोदय,

मैं भारत संचार निगम लिमिटेड के टेलीफोन नंबर 26929291 का धारक हूँ । एक सप्ताह पूर्व मेरा कनेक्शन काट दिया गया है । आपके कार्यालय से प्राप्त सूचनानुसार मैंने टेलीफोन बिल की पूरी राशि जमा करा दी है । भुगतान किए गए बिल की फोटो प्रति भी मैंने संबद्ध कार्यालय में पहुँचा दी है । आपकी जानकारी के लिए इसकी एक फोटो प्रति संलग्न है ।

आपसे अनुरोध है कि मेरा टेलिफोन कनेक्शन तत्काल चालू करवाने की आवश्यक व्यवस्था करें ।

भवदीय,

सिद्धार्थ महेता

उदाहरण 2 : बस सेवा संबंधी शिकायत पत्र ।

अश्फाक शेख
विनय विहार,
बस अड्डे के पास,
बावला,
जिला : अहमदाबाद

दिनांक : 25/02/2017

सेवा में,
गुजरात राज्य परिवहन निगम,
आस्टोडिया,
अहमदाबाद-380001

विषय : बस सेवा की अनियमितता

महोदय,

मैं बावला अहमदाबाद का निवासी हूँ । अहमदाबाद स्थित अपने कार्यालय पहुँचने के लिए मैं बावला बस अड्डे से प्रात: 9:30 बजे छूटने वाली बस का उपयोग करता हूँ । किन्तु पिछले कुछ दिनों से वह बस अनियमित है । अत: मैं अपने कार्यालय में ठीक समय पर नहीं पहुँच पाता हूँ । मेरी तरह अन्य दैनिक-यात्रियों को भी अत्यधिक असुविधा का सामना करना पड़ता है ।

मेरा आपसे अनुरोध है कि उपर्युक्त बस-सेवा नियमित रूप से निर्धारित समयानुसार बस अड्डे से रवाना हो, इसके लिए सब डिपो प्रबंधक को आवश्यक निर्देश देने की कृपा करें ।

भवदीय

हस्ताक्षर
(अश्फाक शेख)

●

पूरक-वाचन

1 क्रिकेट जगत में अनुशासन और टीम भावना

विजय मर्चेन्ट

इन दो शब्दों का प्रयोग तो बहुत अधिक किया जाता है लेकिन सही तरह से समझा बहुत कम जाता है । अनुशासन का अर्थ होता है, कप्तान के आदेशों का पूरी तरह से पालन करना । यदि आपसे कप्तान जल्दी-जल्दी रन बनाने को कहे तो आप उससे विकेट की स्थिति, गेंद कैसी फेंकी जा रही है या पिच की हालत आदि के बारे में किसी प्रकार का तर्क न करें । कप्तान के आदेशों को पालन करने का भरसक प्रयत्न करें ।

किसी भी टीम की सफलता के लिए टीम-भावना बहुत महत्त्वपूर्ण होती है । टीम-भावना का यह मतलब नहीं होता कि टीम के ग्यारह सदस्यों का आपस में मेल-जोल हो, हालाँकि यह भी बहुत जरूरी है । टीम-भावना का अर्थ होता है कि आप अपने व्यक्तिगत संबंधों को दूर रखें और केवल टीम के लिए खेलें, अपने लिए नहीं अधिक-से-अधिक रन तो बनाइए, लेकिन जल्दी बनाइए ताकि उससे आपकी टीम को लाभ भी हो । यहाँ मैं टीम-भावना के तीन उदाहरण प्रस्तुत करूँगा, जिससे कि आपको मेरा आशय ज्यादा अच्छी तरह समझ में आ जाएगा ।

'अ' और 'ब' बल्लेबाजी कर रहे हैं । 'अ' ने 10 से अधिक रन बना लिए हैं । दिन का खेल खत्म होने से 10 मिनट पहले 'ब' आउट हो जाता है । अब 'स' 'अ' के साथ खेलने आता है । उस समय उसकी टीम-भावना उससे यह माँग करती है कि यह खेल का जो थोड़ा-सा समय बचा है, उसमें 'स' को गेंद से जितना बचा सकता है, बचाए । उसे यह भी नहीं सोचना चाहिए कि मैं तो बेहतर बल्लेबाज़ हूँ और इसलिए मेरी विकेट 'स' की तुलना में ज़्यादा कीमती है । यदि वह ऐसा सोचने लगेगा तो इसका अर्थ यह हुआ कि वह अपने लिए खेल रहा है, टीम के लिए नहीं ।

एक दूसरा उदाहरण लें । सोचिए कि 'अ' और 'ब' गेंद फेंक रहे हैं । ऐसे मौके आ सकते हैं जबकि टीम के कप्तान यह चाहते हों कि इस समय उन्हें विकेट नहीं लेनी चाहिए । उस स्थिति में गेंदबाज़ों को अपने कप्तान से किसी प्रकार का तर्क नहीं करना चाहिए, बल्कि उसके आदेश का पालन करना चाहिए ।

एक और उदाहरण फील्ड में कभी-कभी गेंद बहुत उछाल दी जाती है । दो क्षेत्ररक्षक उस गेंद को कैच करने की स्थिति में हैं । 'क' बहुत कुशल क्षेत्ररक्षक है लेकिन वह गेंद से दूर है । 'ख' यों तो गेंद के पास है लेकिन वह कमज़ोर क्षेत्ररक्षक है । टीम-भावना को ध्यान में रखते हुए उस समय 'क' को चाहिए कि वह 'साइड' या 'माइन' पुकारकर उस कैच को लेने के लिए दौड़ पड़े, भले ही यह उसके लिए ज़्यादा कठिन हो ।

इस समय भारतीय टीम में अनुशासन और टीम-भावना के लाभ को पहले से ज़्यादा समझा जाने लगा है । आज हमारे खिलाड़ी टीम के रूप में खेलते हैं, तभी आज हमारा खेल पहले से कहीं ज़्यादा अच्छा है ।

शब्दार्थ

तर्क दलील **भरसक** जहां तक हो सके **आशय** तात्पर्य, उद्देश्य **बेहतर** अपेक्षाकृत ठीक या अच्छा **आदेश** आज्ञा **उदाहरण** मिसाल

•

2 जलियाँवाला बाग में बसंत

सुभद्राकुमारी चौहान

प्रस्तुत कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने भारत की निहत्थी और शांतिपूर्वक सभा कर रही जनता पर जलियाँवाला बाग में अंग्रेज़ सरकार द्वारा गोली चलाने की मार्मिक कथा का वर्णन किया है । इस घटना से मर्माहत कवयित्री ने वहाँ बसंत से धीरे एवं शांतिभाव से आने का आग्रह किया है ।

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते ।
काले-काले कीट, भ्रमर कर भ्रम उपजाते ।
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक-कुल से ।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे ॥

परिमल-हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है ।
हा ! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है ।
आओ, प्रिय ऋतुराज ! किंतु धीरे से आना ।
यह है शोक-स्थान, यहाँ मत शोर मचाना ॥

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना ।
दु:ख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना ।
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे ।
भ्रमर करे गुँजार, कष्ट की कथा सुनावे ॥

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले ।
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले ।
किंतु न तुम उपहार भाव आकर दरसाना ।
स्मृति में पूजा-हेतु यहाँ थोड़े बिखराना ॥

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर ।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर ।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं ।
अपने प्रिय परिवार-देश से भिन्न हुए हैं ॥

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना ।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना ।
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर ।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर ॥

यह सब करना, किंतु, बहुत धीरे से आना ।
यह है शोक-स्थान यहाँ न शोर मचाना ॥

शब्दार्थ

ऋतुराज वसन्तकाल **कीट** कीड़े-मकोड़े **कंटक** काँटा **शुष्क** सूखा, अनार्द **पराग** फूल के भीतरी भाग का धूल **परिमल** सुगंध, सुवास **कोकिला** कोयल **स्मृति में** याद में **ऋतु** मौसम **भ्रम** संशय **मंद** धीमा **आह** दु:ख या क्लेशसूचक शब्द **ओस** शीत (हवा में मिली हुई भाप जो रात्रि के समय सरदी से जमकर जल-कण के रूप में गिरती है ।)

•

3 सत्साहसी

गणेश शंकर विद्यार्थी

इस लेख में साहस के अनेक रूपों की चर्चा की गई है तथा यह भी बताया गया है कि सत्साहस क्या है । सत्साहस और दुस्साहस में क्या अंतर है यह भी बताया गया है ।

संसार के सभी महापुरुष साहसी थे । संसार के काम, बड़े अथवा छोटे, साहस के बिना नहीं होते । बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाए किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता । अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि आज हमारे हृदयों में बसे हैं ।

साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं क्रोधांध होकर स्वार्थवश साहस दिखाने को किसी प्रकार प्रशंसनीय कार्य नहीं कहा जा सकता । इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी-कभी कर गुज़रते हैं । राजा-महाराजा भी अपनी कुत्सित अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर ड़ालते हैं । ऐसा साहस निम्न श्रेणी का साहस है । इस साहस को किसी भी दृष्टिकोण से सत्साहस नहीं कहा जा सकता ।

मध्यम श्रेणी का साहस प्राय: शूरवीरों में पाया जाता है । वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है । इस प्रकार के साहसी मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परंतु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पाई जाती है ।

एक बार बादशाह अकबर के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आए । अकबर ने उनसे पूछा, ''तुम क्या काम कर सकते हो ?''

वे बोले, ''जहाँपनाह ! करके दिखलाएँ या केवल कहकर ?''

बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी । राजपुतों ने घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे । बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मरकर ठंडे हो गए । इस प्रकार का साहस निस्संदेह प्रसंसनीय है परंतु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है ।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं और न ही धन-मान आदि का होना आवश्यक है । जिन गुणों का होना आवश्यक है, वे हैं - हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता । ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस, तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो । इस गुण का नाम है, 'कर्तव्यपरायणता' ।

कर्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए । कर्तव्यपरायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य उत्पन्न होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्तव्य किया । मारवाड़ के मौरूदा गाँव का ज़मींदार बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया । थोड़े ही दिनों बाद मराठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया । यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिलकुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर उसका रक्त उबल पड़ा । वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर, बिना किसी से पूछे जयपुर से तुरंत चल पड़ा । वह समय पर अपने देश और राजा की सेवा करने के लिए पहुँच गया ।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गए परंतु आज भी मारवाड़ के लोग कर्तव्यपरायण बुद्धन सिंह की वीरता व सत्साहस को सम्मानपूर्वक याद करते हैं । राजपूत महिलाएँ आज भी बुद्धन और उसके साथियों की वीरता के गीत गाती हैं ।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दु:ख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है । धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के लिए नहीं, अपितु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है । अपने प्राणों की वह लेशमात्र भी परवाह नहीं करता । हर प्रकार के कलेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता है और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है । सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है । सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में, आया करता है । देश, काल और कर्तव्य पर विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए । यही सत्साहस है ।

शब्दार्थ

साहसी हिम्मती **प्रशंसनीय** प्रशंसा के योग्य **निम्न** नीचा **मध्यम** बीच का **क्लेशों** कष्टों **अभीष्ट** उद्देश्य, ऐच्छिक **कुत्सित** निंदित, नीच **दृष्टिकोण** नज़रिया **सत्साहस** हिम्मत **कर्तव्यपरायण** उचित काम करने वाला **बलिष्ठता** मज़बूती **निर्भीकता** निड़रता **शूरवीर** बहादुर, योद्धा **सर्वोच्च** सबसे ऊँचा

4 असाध्य एड्स

दीपिका गुप्त

एड्स एक असाध्य रोग है । मनुष्य इसका इलाज़ ढूँढ़ने में निरंतर लगा हुआ है । इस समय तक इसका कोई इलाज़ नहीं, परंतु सही जानकारी ही हमें इस रोग से बचा सकती है । ऐसी स्थिति में यह जानकारी शिक्षा का एक आवश्यक अंग है । विद्यार्थी निश्चित रूप से इस उपयोगी ज्ञान से लाभान्वित होंगे ।

प्रतिदिन की भाँति आज जब मैं आठवीं क्लास में पहुँची तो कुछ असामान्य-सा शोर हो रहा था । मेरी उपस्थिति को महसूस करते हुए सभी भागकर अपने-अपने निर्धारित स्थान पर जा बैठे । मैं कुछ कहूँ, इससे पहले रोहन बोला - ''मैम आदिल रो रहा है ।''

क्लास लगभग शांत हो चुकी थी । मैंने चारों ओर देखा, मेरी दृष्टि आदिल पर पड़ी । उसकी आँखें लाल और चेहरे पर क्रोध स्पष्ट दिखाई दे रहा था । मैंने पूछा - ''क्या बात है आदिल ?'' उसने कुछ नहीं, कहकर बात को टालना चाहा पर रोहन फिर बोल पड़ा - ''मैम, जतिन और मयंक इसे 'एडिल' ! 'एडिल' ! कहकर चिढ़ा रहे थे ।'' इस पर आदिल ने रोहन को बैठने का इशारा करते हुए मुझसे फिर वही कहा - ''नो मैम कुछ नहीं ।'' मैंने भी यही सोचा कि बच्चे एक-दूसरे का नाम बिगाड़ने की शरारत तो करते ही हैं । मैंने पढ़ाना शुरू कर दिया । एक बार के लिए मैंने मन में यह सोचा कि इतनी-सी बात पर रोने वाला तो आदिल है नहीं । फिर पढ़ाकर बाहर निकली और अगली क्लास में चली गई । यह बात मैं बिलकुल भूल गई थी । छुट्टी के बाद जब मैं स्टाफ रूप से बाहर निकल रही थी तो लगभग सभी बच्चे जा चुके थे । कॉरिडोर खाली था । तभी मैंने रोहन और आदिल को आते देखा और दोनों के गंभीर चेहरों को देखकर सारी बात पुन: याद आ गई मैंने तुरंत पूछा ''आदिल क्या बात है ? मुझे बताओ शायद में तुम्हारी मदद कर सकूँ ।'' आदिल कुछ नहीं बोला । उसकी आँखों में फिर आँसू तैरने लगे तो रोहन ने बताया - ''मैम इसके दादा जी. एच. आई. वी. पॉज़िटिव हैं, इसलिए मयंक और जतिन इसे एडिल-एडिल कहकर चिढ़ा रहे थे ।'' सुनकर मैं चौंक गई । मैं जिसे बच्चों की शैतानी समझ रही थी, वह तो काफ़ी गंभीर बात थी । स्वयं को संयत कर मैंने कहा - ''यह तो बड़े दु:ख की बात है, पर तुमने यह सब क्लास में क्यों बताया ?'' इस पर आदिल ने बताया कि - ''मयंक के पिताजी डॉक्टर हैं । उन्हीं की देख-रेख में मेरे दादा जी का इलाज चल रहा है ।''

''अच्छा ! ठीक है, मैं उन्हें समझाऊँगी ।'' कहकर मैंने बच्चों को भेज दिया और स्वयं भी घर आ गई ।

घर आकर भी मेरे दिमाग में यही चलता रहा कि यह उपेक्षा करने की बात नहीं, बच्चों को सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है । एक बार सोचा कि कल मैं ही उन्हें समझाऊँगी, फिर मुझे कुछ संकोच हुआ कि मैं इस विषय पर इतनी अच्छी तरह बच्चों की सभी जिज्ञासाएँ शांत नहीं कर पाऊँगी । अच्छा तो यही रहेगा कि इस विषय के किसी अच्छे जानकार के साथ बच्चों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया जाए ।

यह विषय मज़ाक बनाने का नहीं है । संभवत: बच्चों के मन में अधकचरी के साथ-साथ कुछ भ्रांतियाँ भी हैं । इनका निराकरण बहुत ज़रूरी है ।

यही सब सोचते हुए मैंने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग में कार्यरत अपनी एक मित्र को फ़ोन किया । उनसे बात करते ही मेरी सारी उलझन दूर हो गई । उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग का एक स्पेश्यल सेल, स्कूलों के लिए इसी तरह की कार्यशालाएँ आयोजित करता है । मैं जब चाहूँ, वो अपने स्वास्थ्य अधिकारी को स्कूल में भेज सकती हैं ।

अगले दिन सुबह मैं डॉ. अय्यर (स्वास्थ्य अधिकारी) को लेकर क्लास में पहुँची; परिचय के पश्चात् वे सीधे बच्चों से बात करने लगे । सबसे पहले उन्होंने बोर्ड पर लिखा 'एड्स' और बच्चों से पूछा कि ये क्या है ?

लगभग सभी ने हाथ उठाया, सबका उत्तर था कि यह एक बीमारी है । कुछ ने यह भी बताया कि 'यह एक जानलेवा बीमारी है ।'

बच्चों के उत्तर सुनकर डॉ. अय्यर संतुष्ट थे । तभी उन्होंने उन बच्चों की ओर इशारा किया, जो आपस में बातें

कर रहे थे । डॉ. अय्यर ने उन्हीं से पूछा कि वे क्या कहना चाहते हैं ?'' जो भी कहना है, वह खुलकर कहिए और खुलकर पूछिए; हमारी कार्यशाला का यही उद्देश्य है ।''

इस पर बच्चों में से एक ने कहा - ''सर यह एक गंदी बीमारी है, जो गंदे लोगों को होती है ।''

डॉ. अय्यर - ''बेटा आप लोगों ने किसी अच्छी बीमारी का नाम सुना है क्या ?''

क्लास में हँसी का ठहाका लगा । डॉ. अय्यर ने समझाया कि ''हर बीमारी गंदी या खराब ही होती है । पर यह बात कहना गलत है कि यह बीमारी गंदे लोगों को होती है । यह बीमारी किसी को भी हो सकती है । जिसे बीमारी हो गई है, उससे घृणा करना भी गलत है । हमारे समाज में जानकारी के अभाव में लोग एड्स के रोगियों के प्रति बुरा व्यवहार करते हैं । ऐसे भी कई किस्से सामने आए हैं, जब रोगियों को उनके घर वालों ने घर से निकाल दिया । इसलिए सही जानकारी ज़रूरी है । आप हर बात खुलकर पूछिए, मैं आपको पूरी जानकारी दूँगा ।''

इसके बाद डॉ. अय्यर ने श्यामपट्ट (ब्लैक बोर्ड) पर लिखा -

A - एक्वायर्ड (प्राप्त किया हुआ)

I - इम्यूनो (रोगों से लड़ने की क्षमता)

D - डिफिशिएसी (कमी)

S - सिंड्रोम (लक्षणों का समूह)

''एड्स एक भयंकर बीमारी है । यह संसार के लिए एक चुनौती बन चुकी है । विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार लगभग 5 करोड़ वयस्क और 15 लाख बच्चे एच. आई. वी. की चपेट में आ चुके हैं ।'' क्लास बिलकुल शांत थी । सभी ध्यान से सुन रहे थे । आदिल ने हाथ उठाया और पूछा - ''सर ! ये एच. आई. वी. क्या है ?''

डॉ. अय्यर - ''असल में यह एच. आई. वी. ही एड्स की जड़ है । इसे पूरे शब्दों में **ह्यूमन इम्यूनो डेफ़िशिएंसी वायरस** कहते हैं । यह वायरस अर्थात् जीवाणु जिसके शरीर में प्रवेश कर जाता है, उस व्यक्ति में बीमारियों से लड़ने की क्षमता नष्ट हो जाती है ।''

इस बार माधुरी ने पूछा - ''यह वायरस शरीर में प्रवेश कैसे करता है ?''

डॉ. अय्यर - ''यह बात जानना बहुत ज़रूरी है । यही जानकारी आपको एड्स से बचा सकती है । इसे जानने के बाद आप बहुत-सी भ्रांतियों से भी बच सकते हैं । आप समझ जाएँगे कि एड्स के रोगी को छूने से या उसके पास बैठने से यह रोग नहीं फैलता । इसके निम्नलिखित कारण हैं -

(1) संक्रमित सूई (इनफेक्टेड नीडिल)

(क) अनाड़ी डॉक्टर द्वारा रोगी के लिए प्रयोग में लाई गई सूई को यदि किसी स्वस्थ व्यक्ति के लिए पुन: प्रयोग में लाया जाए तो एच. आई. वी. शरीर में प्रवेश कर जाता है ।

(ख) नशीली दवा (ड्रग्स) लेने वालों द्वारा संक्रमित सूई के प्रयोग के समय भी ऐसा हो सकता है ।

(ग) नाक, कान या त्वचा पर किसी भी हिस्से में छेद करवाने के समय ।

(घ) गोदना गुदवाते समय यानी टैटू बनवाने वालों की सूई से भी ऐसा हो सकता है ।

(2) संक्रमित रक्त : शरीर में रक्त की कमी या शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) के समय हमें रक्त की आवश्यकता पड़ती है, उस समय यदि संक्रमित (एच. आई. वी. इन्फ़ेक्टेड) रक्त चढ़ा दिया जाए तो स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में यह विषाणु प्रवेश कर जाता है । रक्त के अतिरिक्त, कभी रक्त के अन्य पदार्थ जैसे - प्लाज़मा, प्लेटलैट्स आदि चढ़वाने के समय भी ऐसा हो सकता है ।

(3) संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौन संबंध : यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति किसी एच. आई. वी. संक्रमित स्त्री या पुरुष के साथ असुरक्षित शारीरिक संबंध बनाता है तो भी यह विषाणु स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर जाता है ।

(4) संक्रमित माँ द्वारा स्तनपान : जो माँ एच. आई. वी. से संक्रमित है, यदि वह बच्चे को अपना दूध पिलाती है तो बच्चे के शरीर में यह विषाणु प्रवेश कर जाता है ।

अत: इन बातों का हमें विशेष ध्यान रखना होगा । यदि इन कारणों से बचा जाए तो हम इस रोग को फैलने से रोक सकते हैं ।''

इस बार सुशांत ने हाथ उठाया - ''सर ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि एड्स के रोगी को क्या परेशानी होती है ?''

डॉ. अय्यर - ''एड्स से ग्रस्त व्यक्ति का वज़न लगातार घटने लगता है । रोगी की जाँघ, बगल और गरदन की ग्रंथियों में सूजन आ जाती है । उसे हमेंशा हल्का बुखार रहता है । उसके मुँह व जीभ पर सफ़ेद निशान पड़ जाते हैं । साथ ही उसे अन्य बीमारियों का संक्रमण भी तुरंत घेर लेता है ।

हाँ ! इसके साथ एक बात यह भी जान लीजिए कि ऐसे लक्षण तपेदिक रोग के भी होते हैं, अत: पूरी तरह जाँच करना जरूरी है । एड्स की जाँच एलिसा टेस्ट और वैस्टर्न ब्लॉट नामक रक्त जाँच से होती है ।''

तान्या - ''सर ! जिस दिन कोई व्यक्ति एच. आई. वी. पॉज़िटिव हो जाता है तो क्या उसे उसी दिन बुखार आ जाता है और ग्रंथियाँ सूज जाती हैं ?''

डॉ. अय्यर - ''ये एक अहम सवाल है । असल में एच. आई. वी. के शरीर में प्रवेश करते ही कुछ पता नहीं लगता ।

संक्रमित व्यक्ति भी सामान्य व्यक्ति जैसा ही दिखाई देता है । इसे एड्स की स्थिति तक पहुँचने में 7 से 10 वर्ष तक का समय लगता है । कोई एच. आई. वी. पॉज़िटिव है, इसकी जानकारी केवल रक्त की जाँच से ही मिलती है ।

आप मेरे कोट पर यह जो लाल रिबन देख रहे हैं, यह एड्स के विरूद्ध संघर्ष का प्रतीक है । एड्स के ख़िलाफ़ विश्वव्यापी अभियान सन 1977 से आरंभ हुआ । सभी देशों की यही धारणा है कि विश्व के सभी लोग इस रोग की गंभीरता को समझें । इसके कारणों को जानकर इसे फैलने से रोकें ।

संयुक्त राष्ट्र संघ (यू. एन. ओ.) ने 1 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय एड्स दिवस घोषित किया है । हमारे देश में एड्स नियंत्रण कार्यक्रम 1999 में 15 सौ करोड़ रुपयों की लागत से शुरू किया गया । दूसरा अभियान कार्यक्रम 2004 से लागू किया गया । इस रोग से लड़ने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाँ (एन. जी. ओ.) समाज की मदद कर रही हैं । विद्यार्थियों में इस रोग के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रतिवर्ष 20,000 विद्यालयों में जानकारी देने का लक्ष्य रखा गया है । आपके विद्यालय में आज की कार्यशाला भी इसी अभियान का अंग है ।''

अंत में डॉ. अय्यर ने शांत बैठकर सुनने और अच्छे प्रश्न पूछने के लिए बच्चों का धन्यवाद करते हुए एक आग्रह किया - ''आप सभी इस देश के आने वाले ज़िम्मेदार नागरिक हैं । यह याद रखिए आज तक इस रोग का कोई उपचार नहीं है । अत: इस रोग के कारणों को जानने के बाद सदैव इस रोग से बचकर रहें ।''

याद रखें कि ''एड्स के रोगी को घृणा या मज़ाक का विषय मत बनाइए । इन रोगियों का मनोबल बढ़ाना और इनमें जीने की इच्छा जगाना ज़रूरी है । मुझे विश्वास है आप लोग ऐसा ही करेंगे ।''

सभी बच्चों ने डॉ. अय्यर को धन्यवाद दिया । सबके चेहरे जानकारी की परिपक्वता से चमक रहे थे ।

मैंने डॉ. अय्यर का धन्यवाद करते हुए उन्हें पूरी क्लास के सामने बाताया कि हमारी क्लास में बड़े ही समझदार घरों के बच्चे आते हैं । इनके माता-पिता एच. आई. वी. पॉज़िटिव लोगों को प्यार से अपने घर में रखते हैं और उनका इलाज़ भी करते हैं । आपके द्वारा दी गई जानकारी इन्हें और भी समझदार बनाएगी ।

शब्दार्थ

असामान्य असाधारण **उपेक्षा** अवहेलना, ध्यान न देना **जिज्ञासा** जानने की इच्छा **निराकरण** उपाय, उपचार **संक्रमित** रोग ग्रस्त **मनोबल** मन की ताकत **टैटू** गोदना, त्वचा के नीचे रंग भरकर आकृतियाँ या चित्र बनवाना **कॉरिडोर** बरामदा **मार्गदर्शन** दिशा दिखाना **स्पेश्यल सैल** खास विभाग **तपेदिक** क्षयरोग **असाध्य** उपचार रहित **संकोच** झिझक **भ्रांति** भ्रम, अपूर्ण ज्ञान **घृणा** नफ़रत **अनाड़ी** बुद्धू **अभियान** व्यापक कार्य

●

5 बंटी की उलझन

मन्नू भण्डारी
(जन्म : सन् 1931 ई.)

श्रीमती मन्नू भण्डारी का जन्म मानपुरा (मध्य प्रदेश) में हुआ था । उनका बचपन राजस्थान में व्यतीत हुआ । आरंभिक शिक्षा और इंटर तक की पढ़ाई अजमेर में संपन्न हुई । उन्होंने बी. ए. कलकत्ता यूनिवर्सिटी से किया और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम. ए. प्रायवेट किया । मन्नू भण्डारी को लेखन संस्कार पैतृक-दाय के रूप में प्राप्त हुए थे । 'मैं हार गयी', 'तीन निगाहों की तस्वीर', 'आँखों देखा झूठ' उनकी प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं । उन्होंने 'महाभोज' और 'आपका बंटी' उपन्यास भी लिखे । उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में आधुनिक मध्यम वर्ग का विशेषत: स्त्रियों का चित्रण किया है । इनमें बदले हुए मानव संबंधों का निरूपण है । आज शिक्षित पति-पत्नी अपने दाम्पत्यजीवन की समस्याओं का हल तलाक में देखते हैं, परंतु इसमें सबसे ज्यादा पीड़ा भोगते हैं, उनके निर्दोष बच्चे । प्रस्तुत अंश 'आपका बंटी' उपन्यास से लिया गया है ।

शकुन और अजय पढ़े-लिखे हैं । साथ नहीं रह पाये । परंतु उनके बेटे बंटी को दोनो चाहिए । माँ और पिता के बीच झूलते बंटी की वेदना जहाँ हमें छू जाती है, वहाँ हमें तलाक के बारे में नये सिरे से सोचने को बाध्य भी करती है ।

आज पापा आनेवाले हैं ।

दस बजे बंटी को सरकिट हाउस पहुँच जाने को लिखा है । मम्मी है कि पता नहीं कैसा मुँह लिए घूम रही है । न हँसती है, न बोलती है । बस गुमसुम । इस बार वकील चाचा के जाने के बाद से ही मम्मी ऐसी हो गई है । वकील चाचा भी एक ही हैं बस । खुद तो बोल-बोलकर ढेर कर देंगे और मम्मी बेचारी की बोलती बंद कर जाएँगे । पता नहीं क्या हो गया है मम्मी को ? उसे देखना शुरू करेंगी तो देखती ही रहेंगी, ऐसे मानो उसके भीतर कुछ ढूँढ़ रही हों । रात को कहानी भी नहीं सुनाती । ज्यादा कहो तो कह देती है, 'सो जा, कल सुनाऊँगी ।' वह तो सो ही जाता है पर मम्मी को ऐसा करना चाहिए ?

उस दिन रात में पता नहीं, कब बंटी की नींद खुल गई । देखा, दूर पेड़ के नीचे कोई खड़ा है । डर के मारे उससे तो चीखा तक नहीं गया था, बस साँस जैसे घुटकर रह गई थी । और वे मम्मी निकली । उसके बाद कितनी देर तक मम्मी उसे थपकाती रही, दिलासा देती रही, पर भीतर दहशत जैसे जमकर बैठ गई थी । आधी रात को ऐसे कहीं घूमा जाता होगा ? चाचा जो कह गये थे गड़बड़ होने की बात । वह बिलकुल ठीक है । जरूर कुछ गड़बड़ हुआ है । मम्मी पहले तो ऐसी नहीं थी । पर वह क्या करे ? मम्मी जब चुप-चुप हो जाती है तो उसका मन बिलकुल नहीं लगता ।

परसों ही तो पापा की चिट्ठी आई थी । लिफाफे पर मम्मी का नाम लिखा था । पिछली बार तो लिफाफे पर भी उसका नाम था । अंदर भी दो कागज निकले, एक मम्मी खुद पढ़ने लगी, दूसरा उसे पकड़ा दिया । तो क्या मम्मी के पास भी पापा की चिट्ठी आई है ? मम्मी-पापा क्या दोस्ती करनेवाले हैं ? उसने अपनी चिट्ठी पढ़ ली और फिर मम्मी की ओर ध्यान से देखने लगा । मम्मी क्या खुश नजर आ रही है ? कहीं कुछ नहीं, बस वैसे ही चुप बैठी है, मानो पापा की कोई चिट्ठी ही नहीं आई हो । एक बार उसकी चिट्ठी पढ़ने तक के लिए नहीं माँगी । पिछली बार तो केवल उसी के पास चिट्ठी आई थी और उसे पढ़कर ही मम्मी कितनी प्रसन्न हुई थीं । पापा के पास भेजने से पहले उसे अपनी बाँहों में भरकर इतना प्यार किया था, इतना प्यार किया था मानो वह कहीं भागा जा रहा हो । और जब वह लौटकर आया था तो मम्मी उससे सवाल पर सवाल पूछे जा रही थीं....'और क्या कहा और क्या कहा'....के मारे परेशान कर दिया था ।

मम्मी से छिपकर उसने मम्मीवाला पत्र उठाकर देखा, घसीटी हुई अंग्रेजी की चार-छ: लाइनें थीं, वह कुछ भी समझ नहीं सका । उसका पत्र हिन्दी में था और बड़े-बड़े साफ अक्षरों में ।

परसों रात को जब वह सोया तो बराबर उम्मीद कर रहा था कि मम्मी जरूर पहले की तरह प्यार करेंगी, कुछ कहेंगी । पर उन्होंने कुछ नहीं कहा, सिर्फ पूछा, 'तू जाएगा पापा के पास ?' यह भी कोई पूछने की बात थी भला । पापा आ रहे हैं और वह जाएगा नहीं ? उसके बाद मम्मी बोली नहीं ।

इस समय मम्मी उदास बिलकुल नहीं हैं । मम्मी की उदासी वह खूब पहचानता है । बिना आँसू के भी आँखें कैसी भीगी-भीगी हो जाती हैं ।

अच्छा है, बैठी रहें ऐसी ही । वह तब पापा के पास जाकर खूब घूमेगा, चीजें खरीदेगा, हाँ, नहीं तो ।

वह जल्दी-जल्दी तैयार हो रहा है और मन ही मन कहीं उन चीजों की लिस्ट तैर रही है जो उसे माँगनी है । कैरम बोर्ड जरूर लेगा, एक व्यू मास्टर भी ।

'दूध-दलिया खा लो ।' फूफी अलग ही अपना मुँह फुलाये घूम रही हैं । पिछली बार भी पापा आये थे तो यह ऐसे ही भन्ना रही थी, जैसे इसकी भी पापा से लड़ाई हो ।

'मैं नहीं खाता दूध-दलिया । बस रोज सड़ा-सा दूध-दलिया बनाकर रख देती है ।'

'बंटी, क्या बात है ?' कैसी सख्त आवाज़ में बोल रही है मम्मी । बंटी भीतर ही भीतर सहम गया । धीरे से बोला, 'हमें अच्छा नहीं लगता दूध-दलिया ।'

'क्यों, दूध-दलिया तो तुझे खूब पसंद है । एक दिन भी न बने तो शोर मचा देता है । आज ही क्या बात हो गई ?'

'पसंद है तो रोज-रोज वही खाओ, एक ही चीज बस । मैं नहीं खाता ।'

'देख रही हूँ जैसे-जैसे तू बड़ा होता जा रहा है, वैसे ही वैसे जिद्दी और ढीठ होता जा रहा है । अच्छा है, भद्द उड़वा सबके बीच मेरी ।'

कैसे बोल रही है मम्मी । इसमें भद्द उड़वाने की क्या बात हो गई । वह नहीं खाएगा दूध-दलिया, बिना नाश्ता किये ही चला जाएगा ।

वह मेज से उठ गया तो मम्मी ने एक बार भी नहीं कहा कि कुछ और बना दो । न कहें, उसका क्या जाता है ?

हीरालाल को कल ही कह दिया था कि ठीक नौ बजे आ जाना । साढ़े नौ बज रहे हैं पर उसका पता नहीं । बंटी बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा है । थोड़ी-थोड़ी देर में घड़ी देख लेता है । मम्मी किताब लेकर ऐसे बैठ गई है, जैसे समय का उन्हें कुछ होश ही नहीं हो । वह बताये कि साढ़े नौ बज गये । पर क्या फायदा, कह देंगी, 'अभी आता होगा ।'

वह सब समझता है । अब उतना बुद्धू नहीं है । मम्मी को शायद अच्छा नहीं लग रहा है कि बंटी पापा के पास जा रहा है । पर क्यों नहीं लग रहा है ? उसकी तो पापा से लड़ाई नहीं है । पर ऐसा होता है शायद ।

एक बार क्लास में विभु से उसकी लड़ाई हो गई थी तो उसने अपने सब दोस्तों की विभु से कुट्टी नहीं करवा दी थी ? शायद मम्मी भी चाहती हैं कि वह भी पापा से कुट्टी कर ले । तो मम्मी उससे कहतीं । अच्छा मान लो मम्मी उससे कहतीं तो वह कुट्टी कर लेता ? और उसके मन में न जाने कितनी चीजें तैर गईं - कैरम बोर्ड, व्यू मास्टर, मैकेनो, ग्लोब...

तभी हीरालाल की छोटी लड़की आई, 'बापू को ताव चढ़ा है, वे नहीं आ सकेंगे ।'

'क्या हो गया ?' मम्मी की आवाज में जरा भी परेशानी नहीं है । हाँ, उनका क्या बिगड़ता है । वे तो चाहती ही है कि मैं नहीं जाऊँ । मैं जरूर जाऊँगा, चाहे कुछ भी हो जाये ।

'भोत जोर का ताप चढ़ा है, सीत देकर । वे तो गूदड़े ओढ़कर पड़े हैं, मुझे इत्तिला देने को भेजा है ।' और वह चली गई ।

'अब ?' बंटी रोने-रोने को हो आया ।

मम्मी एक क्षण चुप रहीं । फिर फूफी को बुलाकर कहा तो फूफी अलग मिजाज दिखाने लगी, 'बहूजी, मैं नहीं जाऊँगी वहाँ ।'

'क्यों ? बस तुम ही मुझे छोड़कर आओगी ।' बंटी फूफी का हाथ पकड़कर झूल आया, 'जल्दी चलो, अभी चलो ।'

'छोड़ आओ फूफी, वरना कौन ले जाएगा ?' कैसी ठण्डी-ठण्डी आवाज में बोल रही हैं । जैसे कहना है इसलिए कह रही है बस । ले जाये, न ले जाये, कोई फरक नहीं पड़ेगा ।

फूफी एकदम बिफ़र पड़ी, 'कोई नहीं है ले जानेवाला तो नहीं जाएगा । मिलने की ऐसी ही बेकली है तो खुद आकर ले जाएँगे । इस घर में आ जाने से तो कोई धरम नहीं बिगड़ जाएगा । आप जो चाहे सजा दे लो बहूजी, मैं वहाँ नहीं जाऊँगी । मुझसे तो आप जानो...'

और बड़बड़ाती हुई फूफी चली गई । मम्मी ने कुछ भी नहीं कहा । मम्मी का अपना काम होता तो कैसे बिगड़ती । अब फूफी को कहो न कि बिगड़ती जा रही है, ढीठ होती जा रही है । बस डाँटने के लिए मैं ही हूँ । ठीक है कोई मत ले जाओ मुझे । और बंटी एकदम वहीं पसरकर रोने लगा ।

'रो क्यों रहा है ? यह भी कोई रोने की बात है भला ? ठहर जा, कालेज के माली को बुलवाती हूँ ।'

मम्मी माली को समझा रही है, 'देखो, कह देना कि आठ बजे तुम लेने आओगे, इसलिए जहाँ कहीं भी हों, आठ बजे तक सरकिट हाउस पहुँच जायें । तू भी कह देना रे । आठ से देर नहीं करें, समझे !' कैसी सख्त-सख्त आवाज में बोल रही हैं, एकदम प्रिंसिपल की तरह ।

रास्ते भर बंटी सोचता गया कि बहुत सारी बातें हैं जो वह पापा से पूछेगा । मम्मी से पूछी नहीं जाती । कभी शुरू भी करता है तो या तो मम्मी उदास हो जाती हैं या सख्त । उदास मम्मी बंटी को दु:खी करती हैं और सख्त मम्मी उसे डराती हैं । और इधर तो मम्मी को पता नहीं क्या कुछ होता जा रहा है । पास लेटी मम्मी भी उसे बहुत दूर लगती है । उसके और मम्मी के बीच में जरूर कोई रहता है । शायद वकील चाचा की कही हुई कोई बात, शायद

कोई गड़बड़ी । उसे कोई कुछ नहीं बताता, वह अपने-आप समझे भी क्या ? मम्मी की बात तो पापा से भी नहीं पूछी जा सकती है ।

पर एक बात वह जरूर पूछेगा कि क्या तलाकवाली कुट्टी में कभी अब्बा नहीं हो सकती ? अगर पापा भी साथ रहने लगें तो कितना मजा आये । पर ऐसी बात पूछने पर पापा ने डाँट दिया तो ?

पापा बाहर ही मिल गये । बंटी देखते ही दौड़ गया और पापा ने उठाकर छाती से लगा लिया, 'बंटी बेटा !' और दोनों गालों पर ढेर सारे किस्सू दे दिये ।

शाम को तांगे में बिठाकर पापा ने उसे घुमाया । आइसक्रीम खिलाई, चाट खिलाई । गन्ने का रस पिलाया । बंटी सोच रहा था कि पापा शायद कुछ चीजें और दिलवायेंगे । लेकिन उन्होंने कुछ नहीं दिलवाया तो बंटी को थोड़ी-सी निराशा हुई । पर फिर भी उससे माँगा नहीं गया । खा-पीकर, घूम-फिरकर शाम को वे लोग वापस आ गये । तांगे से उतरकर बंटी भीतर जाने लगा कि एकदम पापा की चिल्लाहट सुनाई दी । मुड़कर देखा । पापा तांगेवाले को डाँट रहे थे । पता नहीं तांगेवाले ने क्या कहा कि पापा और जोर से चिल्लाये, 'झूठ बोलते हो ? घड़ी देखकर तांगा किया था । मैं एक पैसा भी ज्यादा नहीं दूँगा ।'

बंटी सहमकर जहाँ का तहाँ खड़ा हो गया ।

तांगेवाले ने कुछ कहा और कूदकर तांगे से नीचे उतर आया । पापा एकदम चीख पड़े, 'यू शट अप ! जबान संभालकर बात करो । जितना रहम खाओ उतना ही सिर पर चढ़े जा रहे हैं, जूते की नोक पर ही ठीक रहते हैं ये लोग...' पापा का चेहरा एकदम सुर्ख हो रहा था और आँखों से जैसे आग बरस रही थी । बंटी की साँस जहाँ की तहाँ रुक गई । चपरासी और दरबान ने बीच-बचाव करके तांगे को रवाना किया ।

पापा अभी भी जैसे हाँफ रहे थे और बंटी सहमा हुआ था । उसने पापा को कभी गुस्सा होते हुए तो देखा ही नहीं । एकाएक खयाल आया, कभी इसी तरह उस पर गुस्सा हों तो ? वह भीतर तक काँप गया । एकाएक उसे बड़ी जोर से मम्मी की याद आने लगी । अब वह एकदम मम्मी के पास जाएगा । माली आया या नहीं ?

तभी चपरासी ने कहा, 'बाबा को लेने के लिए आदमी आया था । आधा घंटे तक बैठा भी रहा, अभी-अभी गया है, बस आपके आने के पाँच मिनट पहले ही ।'

बंटी की आँखों में आँसू आ गये । किसी तरह उन्हें आँखों में ही पीता हुआ वह बड़ी असहाय सी नज़रों से पापा की ओर देखने लगा । मन में समाया हुआ एक अनजान डर जैसे फैलता ही जा रहा था ।

पापा ने एक बार घड़ी की तरफ नज़र डाली, 'चपरासी चला गया तो ? यह भी अच्छा तमाशा है, घड़ी देखकर घर में घुसो । जो समय उधर से दिया गया है उसी में घूमो-फिरो और लौट आओ । नोंनसेंस !'

एकाएक ही बंटी की छलछलाई आँखें बह गईं । पता नहीं माली के लौट जाने की बात सुनकर या कि पापा का गुस्सा देखकर या कि इस भय से कि पापा कहीं रात में यहीं रहने को न कह दें । दो दिन से पापा को लेकर जो उत्साह मन में समाया हुआ था, वह एकदम बुझ गया और सामने खड़े पापा उसे निहायत अजनबी और अपरिचित से लगने लगे ।

'अरे तुम रो क्यों रहे हो ? रोने की बात क्या हो गई ?'

'माली चला गया, अब मैं घर कैसे जाऊँगा ?' सिसकते हुए बंटी ने कहा ।

'पागल कहीं का । यहाँ क्या जंगल में बैठा है ? मैं नहीं हूँ तेरे पास ?'

'मम्मी के पास जाऊँगा ।' रोते-रोते ही बंटी ने कहा ।

'हाँ-हाँ, तो मैंने कब कहा कि मम्मी के पास नहीं जाओगे ।'

'पर माली तो चला गया ?'

'चला गया तो क्या ? मैं तुम्हें छोड़कर आऊँगा, बस ।'

बंटी ने ऐसे देखा जैसे विश्वास नहीं कर रहा हो । कहीं उसे बहका तो नहीं रहे । अभी चुप करने के लिए कह दें और फिर कहने लगें कि सो जाओ ।

पापा ने पास आकर उसका माथा सहलाया, गाल सहलाये, तो टूटा विश्वास जैसे फिर जुड़ने लगा । पापा फिर अपने लगने लगे ।

'पागल कहीं का । इतना बड़ा होकर रोता है मम्मी के लिए ।' तो अँसुवाई आँखों से ही बंटी हँस दिया । भीतर ही भीतर बड़ी शर्म भी महसूस हुई अपने ऊपर । सचमुच उसे इतनी जल्दी रोना नहीं चाहिए । बच्चे रोया करते हैं बात-बात पर वह तो अब बड़ा हो गया है । अब कभी नहीं रोएगा इस तरह ।

बंटी पापा के साथ तांगे में बैठा तो मन एकदम हल्का होकर दूसरी ओर को दौड़ गया । पापा को देखकर मम्मी को कैसा लगेगा ? एकदम खुश हो जाएँगी । वह खींचकर पापा को अंदर ले जाएगा और मम्मी का हाथ, पापा का

हाथ मिला देगा - चलो कुट्टी खत्म । फिर मम्मी और वह मिलकर पापा को जाने ही नहीं देंगे । सोते, घूमते-फिरते कितनी बार मन हुआ था कि मम्मी की बात करे । पापा से सब पूछे, जो मम्मी से नहीं पूछ पाता है । पर पापा का चेहरा देखता और बात भीतर ही घुमड़कर रह जाती । पर पापा को साथ लाकर और दोस्ती की बात सोच-सोचकर उसका मन थिरकने लगा ।

जाने कैसे-कैसे चित्र आँखों के सामने उभरने लगे । पापा, मम्मी और वह घूमने जा रहे हैं । पापा उसके साथ खेल रहे हैं । वह पापा के साथ मिलकर मम्मी को चिढ़ा रहा है या कभी मम्मी के साथ मिलकर पापा को ।

अजीब-सा उत्साह है जो मन में नहीं समा रहा है । कहानियों के न जाने कितने राजकुमार मन में तैर गये, जो अपनी अपनी माँ के लिए समुद्र तैर गये थे या पहाड़ लाँघ गये थे । वह भी किसी से कम नहीं है । माँ के लिए पापा को ले आया । अब दोस्ती भी करवा देगा । वरना कोई ला सकता था पापा को ? अब चिढ़ाये फूफी कि बंटी लड़की है । अब मम्मी कभी उदास नहीं होंगी । लेटे-लेटे छत या आसमान नहीं देखेंगी । टीटू की अम्मा यह नहीं पूछेंगी, 'आते हैं तुम्हारे पापा यहाँ ?'

उसने बड़े थिरकते मन से पापा की ओर देखा । पापा एकदम चुप क्यों हैं ? अंधेरे में चेहरा ठीक से नहीं दिखाई दे रहा है । वह चाहता है पापा कुछ बोलते चलें, कलकत्ता चलने की बात ही कहें या कि उसे लड़कोंवाले खेल खेलने की बात ही कहें, पर कुछ तो कहें । बोलते हुए पापा उसे अपने बहुत पास लगने लगते हैं । चुप हो जाते हैं तो लगता है जैसे पापा कहीं दूर चले गये । जैसे उसके और पापा के बीच में कोई और आ गया ।

उसी निकटता को महसूस करने के लिए उसने अनायास ही पापा का हाथ पकड़ लिया ।

पर पापा हैं कि बिलकुल चुप । पापा की चुप्पी से बंटी के मन में अजीब तरह की बेचैनी घुलने लगी । कहीं दोस्ती की बात करते ही पापा चिल्लाने लगें आँखें लाल-लाल करके तो ? पापा का वही चेहरा उभर आया । ऐसे चिल्लाते होंगे तभी शायद मम्मी ने कुट्टी कर ली होगी । बंटी ने फिर एक बार पापा की ओर देखा । अंधेरे में पापा का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा ।

'बस, बस यही घर है, बाईं तरफवाला ।' कालेज के पास आते ही तांगा थम गया था । बंटी ने कहा तो तांगेवाले ने बाईं तरफ को लगा दिया ।

बंटी ने हाथ और कसकर पकड़ लिया । हाथ पकड़े-पकड़े ही वह तांगे से नीचे उतरा और एक तरह से पापा को खींचता हुआ गेट की तरफ चला । उसे लग रहा था कि यदि उसकी पकड़ जरा भी ढीली हुई तो पापा छूटकर चल देंगे ।

सड़क पर से वह चिल्लाया, 'मम्मी, पापा आये हैं !'

लोन में से एक छायाकृति तेज-तेज कदमों से फाटक की ओर आई । फाटक खुला और मम्मी सामने आ खड़ी हुई । मम्मी को देखते ही बंटी का हौसला बढ़ गया । लगा जैसे वह अपनी सुरक्षित सीमा में आ गया है । पापा के हाथ को पूरी तरह खींचता हुआ बोला, 'भीतर चलिए न पापा ? मैं अपना बगीचा दिखाऊँगा । मोगरा खूब फूला है ।'

पर मम्मी और पापा जहाँ के तहाँ खड़े हुए हैं, चुप और जड़ बने हुए ।

'मैंने आदमी भेजा था । आपको शायद लौटने में देर हो गई । सो वह राह देखकर चला आया । आपको तकलीफ करनी पड़ी ।'

'कोई बात नहीं ।' बंटी ने चौककर पापा की ओर देखा । यह पापा बोले थे ?

एकदम बदला हुआ स्वर । न प्यारवाला, न गुस्सेवाला । पता नहीं उस स्वर में ऐसा क्या था कि बंटी की पकड़ ढीली हो गई । फिर भी उसने कहा, 'पापा, एक बार भीतर चलिए न । मम्मी, तुम कहो न ।' बंटी रुआँसा हो गया ।

'कुछ देर बैठ लीजिए । बच्चे का मन रह जाएगा ।' मम्मी कैसे बोल रही है ? किसी को ऐसे कहा जाता होगा ठहरने के लिए ?

'रात हो गई है, फिर लौटने में बहुत देर हो जाएगी ।'

'इसी तांगे को रोक लीजिए, अभी कहाँ देर हुई है, चलिए न ।' हाथ पर झूलते हुए बंटी ने पापा को भीतर खींच ही लिया । पापा भीतर आये । लॉन में ही मम्मी-पापा आमने-सामने कुर्सी पर बैठ गये । बंटी पुलकित । उसे समझ नहीं रही कि क्या करे और कैसे करे ।

शब्दार्थ

सहमना डरना **ढीठ** उद्दंड, बेअदब **इत्तिला** सूचना **बेकली** बेचैनी **सुर्ख** लाल **निहायत** बहुत ज्यादा, अत्यधिक

मुहावरे

बोलती बंद कर देना चुप कर देना **आँखें छलछला आना** रोना **मन थिरकने लगना** आनंदित होना **आँखें लाल करना** गुस्सा करना **चेहरा सुर्ख होना** शर्म या गुस्से से चेहरा लाल होना **छाती से लगा देना** बहुत प्यार करना

• • •